বৰ্ষাৰণ্যম বर्षारण्यम

বৰ্ষাৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠান
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान

ছমহীয়া ই-আলোচনী

বৰ্ষ-১

সংখ্যা-প্ৰথম

छमाही ई–पत्रिका

वर्ष-१

संख्या - प्रथम

प्रवेशांक

ভাৰতীয় বন গৱেষণা আৰু শিক্ষা পৰিষদ

পৰিৱেশ,বন আৰু জলবায়ু পৰিবৰ্তন মন্ত্ৰালয়,ভাৰত চৰকাৰৰ অধীনস্থ এক স্বায়ত্ত পৰিষদ

পো.ব.সংখ্যা ১৩৬,যোৰহাট-৭৮৫০০১,অসম

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ एक स्वायत्त परिषद्

पोस्ट बॉक्स सं. १३६,जोरहाट –७८५००१, असम

संरक्षक

आर. एस. सी. जयराज, भा.व.से.

निदेशक

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, असम

मार्गदर्शन

डॉ. विपिन प्रकाश

वैज्ञानिक-डी एवं कार्यकारी हिन्दी अधिकारी

संयोजन-संपादन

श्री शंकर शर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री भुबन कछारी, अनुसंधान सहायक

आवरण एवं साज-सज्जा

श्री भुबन कछारी, अनुसंधान सहायक

श्री शंकर शर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री असीम चेतिया, पुस्तकालय सूचना सहायक

संपादकीय कार्यालय

हिन्दी प्रकोष्ठ, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

आवरण

उत्तर-पूर्वी राज्यों की जैव एवं सांस्कृतिक विविधता

प्रकाशक

निदेशक
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार के अधीनस्थ एक स्वायत्त परिषद्)
पोस्ट बॉक्स नं. १३६, जोरहाट - ७८५००१, असम

(c) इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। हिन्दी प्रकोष्ठ, व.व.अ.सं., जोरहाट का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

বিষয় সূচী/विषय सूची

1	जोरहाट में मेरे यादगार क्षण	एन. पी. महादेवन	7
2	जोरहाट की यादें	प्रीति वर्मा	8
3	संस्थान में राजभाषा हिन्दी का उद्भव	आलोक यादव	9
4	हरित खाद	कुंतला नेउग बरुआ	10
5	कहानी किताब की	वैष्णवी बरठाकुर	10
6	प्यार की लड़ियाँ	ध्रुव गुरुङ	11
7	आसमान	इचिका रंजन	11
8	हिन्दी एक मिठास है	म. निशार आलम	12
9	माँ	तन्वी काश्यप	12
10	संवैधानिक प्रावधान (राजभाषा हिन्दी)		13-17
11	प्रशासनिक शब्दावली		18-19
12	‘লা থেতি’ – স্বাৱলম্বনৰ এক উপায়	ৰাজীৱ কুমাৰ কলিতা	20-21
13	উপলব্ধিৰ *Experiment*	নিৰেন দাস	21-22
14	লতা বাঁহ	দেৱজিত নেওঁগ	22
15	অবান্তৰ	নয়নমণি শইকীয়া	23-24
16	‘আৰ.এফ.আৰ.আই.’ৰ হিৰো	নিলাঞ্জন গোঁহাই	25
17	আজিৰ সমাজত যোগৰ প্ৰাসংগিকতা	ভূৱন কচ্ছাৰী	26-27
18	উন্নয়নশীল দেশত মানৱ সমম্পদৰ অপচয়: এক চমু আলোকপাত	অসীম চেতিয়া	28-30
19	সপোন	অৰবিন্দ ডেকা	31
20	হেৰুৱা আশাৰ পমথেদি	দিপান্বিতা ডেকা	31
21	মহাবিজ্ঞান	নিবেদিতা বৰুৱা দত্ত	32
22	প্ৰণিপাত	নয়নমণি শইকীয়া	32
23	শিক্ষাগুৰু	পুতুল বুঢ়াগোহাঁই	33
24	বৰ্ষাৰণ্য	বিনোদ কুমাৰ সোনোৱাল	34
25	বৰ্ষাৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিস্থানৰ চৌহদত বিচৰণ কৰা কিছুমান পক্ষী	শ্ৰীমতী প্ৰীতিমণি দাস বৰা	35

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
(पर्यावरणए वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त परिषद्)
पोस्ट बॉक्स नं. 136, जोरहाट – 785001, असम।
RAIN FOREST RESEARCH INSTITUTE
Indian Council of Forestry Research & Education
(An Autonomous body of Ministry of Environment, Forests & Climate Change, Govt. of India
Post Box No. 136, Jorhat- 785001, Assam

संदेश

आर. एस. सी. जयराज, भा.व.से.
निदेशक

अध्यक्ष
राजभाषा कार्यान्वयन समिति
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान के परिवार के सदस्यों ने हिंदी सप्ताह-2015 के अवसर पर हिंदी और असमीया को बढ़ावा देने के लिए, संस्थान के भीतर परिचालन हेतु एक ई-पत्रिका शुरू करने का निर्णय लिया गया है। यह कर्मचारियों के साहित्यिक रुचि और उनके परिवार के सदस्यों के बीच छिपी प्रतिभा को भी बाहर लाने का एक प्रयास है। यह पत्रिका वर्षा वन अनुसंधान संस्थान के साथ जुड़े सभी लोगों के लिए सांस्कृतिक और भाषिक अभिव्यक्ति का एक माध्यम के रूप में काम करेगी, और आशा है कि संस्थान के सांस्कृतिक माहौल को समृद्ध बनाने में यह एक अहम भूमिका अदा करेगी।

भाषा केवल एक संपर्क का साधन ही नहीं, अपितु संस्कृति की अभिव्यक्ति भी है। भाषा का एक गहरा सांस्कृतिक आधार है, और नई भाषाओं के सीखने से सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संवर्धन में मदद मिलती है। इस प्रक्रिया में जब तक हम मातृभाषा को भूलते नहीं, और यदि कोई नई भाषा बाहर से थोपी नहीं गयी हो, तो ज्यादा से ज्यादा नई भाषाओं के सीखने से सांस्कृतिक संवर्धन होता है। मुझे उम्मीद है कि इस नई ई-पत्रिका के लिए लेख का योगदान करने की प्रक्रिया में, जिनकी मातृभाषा न हिंदी है और न ही असमीया, उनको सबसे अधिक लाभ होगा । जिनकी मातृभाषा हिन्दी या असमीया है वे लोग भी अपनी सृजनशीलता को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्राप्त करेंगे।

मैं, डॉ विपिन प्रकाश, कार्यकारी हिंदी अधिकारी और श्री शंकर शर्मा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक को हिंदी सप्ताह के इस शुभ अवसर पर प्रथम ई-पत्रिका प्रकाशित करने के विचार को मूर्त रूप देने के लिए बधाई देता हूँ। आईए हम इस सृजनशीलता को आगे बढ़ाने में इस प्रयास को समृद्ध करें।

आर.एस.सी. जयराज
निदेशक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोरहाट

TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE, JORHAT

(established by Govt. of India, Ministry of Home, under the Chairmanship of Director, NEIST : all Central Govt offices of Jorhat are member)

उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट, आसाम : भारत

NORTH-EAST INSTITUTE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY] JORHAT,ASSAM:INDIA

Ph:0376+2370012/2372523(Chairman) EPABX:2370117*2245 (TOLIC Office)

Gram: RESEARCH Fax : 0376-2370011/ 2370115

E mail : director@rrljorhat.res.in / kumar_a@rrljorhat. res.in

hindicell@rrljorhat.res.in Website : www.neist.res.in

सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोरहाट

संदेश

यह बड़े हर्ष की बात है कि **वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट** ने राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने के उद्येश्य से हिन्दी एवं असमियाँ के मिश्रित स्वरूप के साथ ई-पत्रिका आरंभ करने जा रही है । वस्तुतः हिन्दीतर भाषी की स्व-रचनाएँ जब हिन्दी की पत्रिका में प्रकाशित होती हैं तो उन्हें बहुत खुशी ही नहीं होती बल्कि वे हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं । इससे राजभाषा हिन्दी को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है । अँग्रेजी से दूरी बनाने के लिए स्थानीय संवैधानिक भाषा को बढ़ावा देना आज की मांग है । कार्यालय में अँग्रेजी इस कदर समाई है कि कार्मिक अपनी मातृभाषा को भी भूल रहे हैं, अतः पत्रिका में असमियाँ को समाहित करना विवेकपूर्ण निर्णय है । मैं इसका तहे दिल से स्वागत करता हूँ । कर्मियों में हिन्दी के प्रति रुचि पैदा करने का यह एक सशक्त माध्यम है । साथ ही डिजिटल भारत के नव-निर्माण में यह ई-पत्रिका सहयोगी होगा ।

यह प्रयास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोरहाट के अन्य सदस्य कार्यालयों के लिए अनुकरणीय है ।

आशा है भविष्य में भी यह उत्साह कायम रहेगा ।

हार्दिक शुभकामनओं के साथ,

आपका

अजय कुमार

संपादक के कलम से

शंकर शर्मा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

एक छोटा सा प्रयास किसी भी बड़ी पहल को लाने में सक्षम है। हिन्दी भाषा की अथाह सागर में डुबकी लगाने वाले महानुभाव पूर्वोत्तर क्षेत्र के इस छोटे से शहर में हिन्दी की अवस्था देखकर व्यथित हो सकते हैं। परन्तु हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि इस छोटे से प्रयास को देखकर वे हमें अपने आशीष से धन्य करेंगे। इस ई-पत्रिका को प्रकाशित करने के पीछे संस्थान के अधिकारियों, कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों की सृजनशीलता को एक सामुहिक मंच प्रदान करना है। आधुनिक जीवन शैली में जीविका उपार्जन करने की प्रतिस्पर्धा में हम अपनी सृजनशीलता को खो देते हैं। यह ई-पत्रिका कुछ हद तक उसकी पुनः तलाश है।

संविधान के आंठवीं अनुसूची के अंतर्गत प्रमुख 22 राष्ट्रभाषाओं में से असमीया भाषा एक अन्यतम भाषा है जो अपनी निजस्व शैली, अभिव्यक्ति कौशल, समृद्ध धरोहर और साहित्यक विविधता से पूर्ण है। असमीया भाषा-साहित्य विकास के चिरंतन प्रवाह से गुजरकर वर्तमान अवस्था तक पहुँची है। परंतु भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की तरह इसे भी अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व से बचाना है। भारत संघ के संविधान प्रणेताओं को भी शायद यह चिंता थी इसीलिए उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के उत्थान के लिए विशेष व्यवस्था की थी। राजभाषा हिन्दी और असमीया भाषा की इस समन्वित ई-पत्रिका के प्रकाशन से इस बात की ओर संकेत है कि राजभाषा में क्षेत्रीय भाषा को सम्मान दिया जाता है। राष्ट्रवाद की नींव समन्वय से संभव है। रोज़गार के वजह से हो या अन्य कारण से, लोगों को एक-दूसरे जगह आना-जाना पड़ता है। भाषा ही वह माध्यम है जो लोगों को पास लाती है। असमीया भाषी लोगों के लिए हिन्दी सीखना अब आवश्यकता बन गई हैं। ठीक उसी प्रकार हिन्दी भाषी लोगों को असमीया भाषा का सम्यक ज्ञान उनके अनेकानेक प्रयोजनों को पूरा करने के लिए अति आवश्यक हैं। यही समय की मांग है।

हिन्दी प्रकोष्ठ की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि संस्थान की रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया जा सके। हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि आज यह अभिव्यक्ति मूर्त आकार ले रही हैं। हमारें लिए यह भी अत्यंत सौभाग्य की बात है कि यह ई-पत्रिका हिन्दी एवं असमीया में है। संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कार्मिकों तथा उनके परिवार के लोगों ने बड़ी रुचि से इस ई-पत्रिका को संभव बनाया है। प्रशासन ने रुचि ली और हमें प्रोत्साहित किया, उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। इस संस्थान से स्थानांतरित और सेवानिवृत्त अधिकारियों का भी विशेषरुप से उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। क्योंकि उनके प्रत्यक्ष या परोक्ष मार्गदर्शन से हिन्दी प्रकोष्ठ का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। आप सभी के लेख और बहुमूल्य सुझाव हमारें प्रेरणा के स्रोत है। हिन्दी प्रकोष्ठ के प्रभारी अधिकारी डॉ. विपिन प्रकाश के सबल नेतृत्व और श्री भुबन कछारी व श्री असीम चेतिया के सक्रिय सहयोग का फल आज आपके सामने प्रस्तुत है। आशा है कि आगे भी हिन्दी प्रकोष्ठ आप लोगों की सेवा में पुनः उपस्थित होगा।

जोरहाट में मेरे यादगार क्षण

एन.पी. महादेवन, सेवानिवृत वैज्ञानिक

अनुवाद: शंकर शर्मा

बहुत खुशी और हर्ष के साथ मैं जोरहाट में अपने अल्प अवधि अर्थात करीब 2 साल में मिले मीठी यादों को याद करना चाहता हूँ।

आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर (तमिलनाडू) से आर एफ आर आई, जोरहाट में मेरे स्थानांतरण के साथ-साथ मेरे पदोन्नति का आदेश सितंबर, 2009 के दौरान मिलने पर मेरे परिवार के सदस्य और मैं भी खुश होने के विपरीत परेशान था (वर्ष 2013 तक 4 वर्ष ही सेवानिवृत्त के लिए शेष था), क्योंकि अपने कैरियर के अंत में घर-परिवार से बहुत दूर जाने का कष्ट तथा उत्तर-पूर्व में उग्रवादी वातावरण में मुझे काम करना था। लेकिन वे शंकाएं केवल थोड़े समय के लिए ही थे क्योंकि संस्थान के निदेशक, मेरे सहयोगी श्री राजाऋषि और सभी व्यक्तियों से मुझे जो प्यार, देखभाल, सहायता और स्नेह मिला उससे मैं प्रभावित था।

अपनी सेवाकाल के दौरान मुझे असम और मेघालय के कई सुंदर वन क्षेत्रों का दौरा करने का मौका मिला, जैसे काजीरंगा, जोयपोर, हुकांजूरी, खेतु, लक्षीपाथर, और शिलांग जो कि *Dipterocarpus macrocarpus* (होलोंग), *Aquilaria malaccensis* (अगर), *Shorea assamica* (मकाई) आदि वनस्पति प्रजाति के अद्वितीय स्थल है। एक सिंगवाले गेंडे तथा अन्य वन्य जीवों को देखना और काजीरंगा में हाथी सफारी वास्तव में यादगार अनुभव है। शिवसागर के पुरातात्विक स्मारकों, लीडो घाटी, मार्घेरीटा में कोल इंडिया लिमिटेड के कोलियरी और दुलियाजान, डिगबोई में ऑइल इंडिया लिमिटेड के सबसे पुराने तेल कुएँ आदि अन्य आकर्षणीय स्थल है। यहाँ मैदानों में चाय बगानों का होना दक्षिण भारत के नीलगिरी, कोडाइकनाल, भलपराइ, मुन्नार आदि पहाड़ी ढलानों में चाय बागानों की उपस्थिति के विपरीत एक अलग ही पहचान है। विशाल ब्रह्मपुत्र और सबसे बड़े ताजे पानी का नदी द्वीप माजुली का दृश्य वास्तव में मनमोहक है।

आर.एफ.आर.आई. परिसर में तेंदुएं मिलना भी एक रोमांचकारी अनुभव रहा। इन तेंदुओं को पकड़ा गया और पास के वनों में 3 या 4 बार छोड़ा भी गया, लेकिन जल्द ही एक दूसरा तेंदुआ पहले की जगह ले लेता है। परिसर के निवासी इस जंगली बिल्ली के साथ रहने के आदी हो चुके हैं।

जोरहाट में अपने प्रवास के दौरान, मैं कुछ त्यौहारों और मेलों जैसे; दुर्गा पूजा, बिहु, शिवरात्रि, रंगारंग होली आदि पर्व के जरिए असम के समृद्ध संस्कृति, परंपरा और असम के लोगों की जीवन शैली का साक्षी रहा। इन त्यौहारों को असमीया लोग चाहे कोई भी जाति, धर्म, पंथ और विश्वास को मानने वाला हो एकसाथ हर्षोल्लास और बहुतायत से मनाते है। युवा लड़के और लड़कियाँ लहराते कदम और हाथ के ताल तथा कूल्हों के तेज गति द्वारा जो बिहु गीतों और नृत्यों का प्रदर्शन करती हैं वह हमेशा मेरी स्मृति में रहेगा।

अंत में, मैं यह व्यक्त करना चाहता हूँ कि हालांकि अपने व्यक्तिगत कारणों के लिए मुझे मजबूरन अपने गृह नगर वापस स्थानान्तरण लेना पड़ा, फिर भी बहुत भारी दिल के साथ मैंने जोरहाट छोड़ा था। आर.एफ.आर.आई. के सभी लोगों से मुझे जो प्यार और स्नेह मिला वह याद आता रहेगा तथा जोरहाट में मेरे अल्प अवधि के दौरान रहने के वह सुन्दर क्षण मेरी स्मृति में हमेशा के लिए रहेगा।

जोरहाट की यादें

प्रीती वर्मा

पत्नीः डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून

मैंने उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में अपने जीवन का पूरा समय निकाल दिया। सन 2010 में मेरी शादी हुयी और पति की कर्म भूमि असम के बारे में पहलीबार सुनने को मिला भूगोल की किताबों से इतर। वहाँ जाने से पूर्व मन ने कभी इतनी दूर जाने की संकल्पना ही नहीं की थी। लखनऊ से गुवाहाटी तक के लम्बे सफर में ज्यादा कुछ पता नहीं चला। आखिर मैं जोरहाट पहुँच गयी। रात के सन्नाटे में वहीं पर सबसे पहले मनीष भैया से मुलाकात हुई, जैसा उनके बारे में सुना था उससे ज्यादा पाया मुस्कराते हुए सहृदय।

सुबह सूरज ने दस्तक दी तो हड़बड़ाहट में ऐसा लगा कि बहुत देर हो गयी। घड़ी में देखा तो सर्दी के दिन में भी अभी पांच बजे थे। अपने प्यारे से छोटे सुन्दर से घर की ढेर सारी खिड़कियों से बाहर देखा तो हर तरफ शान्ति छायी हुयी थी। कहीं कोई कोलाहल नहीं थी सारी तरफ प्रकृति ने हरियाली की चादर बिखेर रखी थी। घास भी इतनी प्यारी हो सकती है यह पहली बार यहाँ आकर पता चला।

धीरे-धीरे सभी लोगों से मिलना-जुलना शुरू हुआ। छोटे-छोटे प्यारे बच्चे जब भी मिलते जितनी बार मिलते नमस्ते कर मन को खुश कर देते। भाषा की सौम्यता, घर और उसका परिवेश यहाँ की संस्कृति का अभिन्न अंग है। यहाँ के गांवों की स्वच्छता मन मोहने वाली है। घरों को बहुत व्यवस्थित बनाकर घर के चारो ओर बहु उपयोगी पेड़ पौधों का रोपन किया जाता है।

छोटी-छोटी खुशियों को मिल-जुलकर कैसे मनाते है यह यही आकर पहली बार पता चला। यहाँ बिताया समय हमारें जीवन का अभिन्न अंग बन चुके है। चाहे वह कलॉनी के छोटे-छोटे प्यारे बच्चे हमेशा याद आते है, टिया, कुंही, तन्वी, मुनम्मा, आस्था, मेघा, अविनाश, पाही, मधुस्मिता, आकाश, अरूणदीप , पिक्सी, विशाल, विशाखा, रौनक, अकुल, स्वास्तिका, वत्सल और या फिर अंत में बड़े भाई की तरह हमेशा स्नेह देने वाले नीरेन भईया।

संस्थान में राजभाषा हिन्दी का उद्भव

आलोक यादव

वैज्ञानिक-डी,

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून

भारत विविधता का देश है। यहाँ की वेश-भूषा, रहन-सहन, बोलचाल, संस्कृति में भिन्नता इस बात को पूर्णता चरितार्थ करती है। विविधता की बात हो तो, हमारें पूर्वोत्तर राज्यों का एक विशेष दर्जा है। यहाँ के राज्यों की भिन्न-भिन्न स्थानीय भाषाएं एवं संस्कृति इस बात का प्रमाण है। संस्कृतिक रुप से धनी होने के कारण अन्य किसी भाषा का समागम थोड़ा कठिन होता है और यही कारण है कि राजभाषा हिन्दी इतना प्रचार इस क्षेत्र में नहीं है। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में भी सन 2009 तक संस्थान के दैनिक कार्यों में हिन्दी का विशेष प्रयोग नहीं था।

संस्थान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के प्रथम प्रयास श्री एन. के. वासु (पूर्व निदेशक) द्वारा किया गया। जिनके कार्यकाल में संस्थान में एक कर्मठ एवं प्रयत्नशील हिन्दी अनुवादक श्री शंकर शर्मा की नियुक्ति हुई। तदोपरांत निदेशक महोदय ने मुझे कार्यकारी हिन्दी अधिकारी का प्रभार देते हुए, हिन्दी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी दी। स्थानीय अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच हिन्दी प्रचलित न होने के कारण संस्थान के दैनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बहुत कम होता था। परन्तु निरंतर प्रयास से धीरे -धीरे कर्मचारियों के बीच हिन्दी की गतिविधियों की शुरूआत हुई।

हिन्दी सप्ताहः 2009 – हिन्दी के प्रचार-प्रसार को सबसे पहले गति सन् 2009 में मिली जब संस्थान ने पहली बार हिन्दी

सप्ताह और हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों में तत्कालीन निदेशक श्री एन.के. वासु की स्वभागीदारी ने इसकी सफलता को चरम पर पहुँचा दिया। इसके अतिरिक्त संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर भाग लेकर इसे सफल बनाया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कुछ विशेष व्यक्तियों का योगदान रहा, जैसे श्री पवन कुमार कौशिक, डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा, श्री पुलिन शर्मा आदि।

हिन्दी कार्यशालाः राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत सभी केंद्रीय कार्यालयों में हिन्दी भाषा के कार्यालय प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी कार्यशाला के आयोजन का प्रावधान है। केंद्रीय संस्थान होने के कारण संस्थान ने भी इसके आयोजन की शुरुआत की। इस कड़ी में संस्थान में पहली बार हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रुप में श्री अजय कुमार, हिन्दी अधिकारी, उ.पू.वि.प्रौ.सं.(निस्ट) , को आमंत्रित किया गया। श्री कुमार के व्याख्यान ने सभी का मन मोह लिया। इसके बाद तो संस्थान में समय-समय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन शुरु हो गया।

हिन्दी परीक्षाः पूर्वोत्तर राज्यों में आम तौर पर क्षेत्रीय भाषाएं बोली जाती है। ऐसे में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत आवश्यक होता है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा ऐसे कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलाने का प्रावधान है। संस्थान में भी श्री शंकर शर्मा के अथक प्रयास से कर्मचारियों ने विभिन्न परीक्षाओं में अच्छे अंकों से पास किया और पुरस्कार भी प्राप्त किए।

नराकासः केन्द्रीय संस्थानों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए नगर स्तर पर एक संस्था का गठन किया जाता है। जिसे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति या नराकास कहा जाता है। नराकास प्रत्येक छमाही सभी केन्द्रीय कार्यालयों, बेंकों और रक्षा विभाग के विभिन्न कार्यालयों को आमंत्रित करती है। सभी कार्यालय हिन्दी की उत्थान में अपने द्वारा किए गये कार्यों का ब्यौरा देते है। हमारा संस्थान भी 2009 में नराकास के साथ जुड़ा और 2010 में संस्थान को राजभाषा हिन्दी में बेहतर कार्यान्वियन के लिए सम्मानित किया गया।

अन्य: इसके साथ साथ संस्थान लगातार राजभाषा के प्रचार-प्रसार में लगा रहा। इसी कड़ी में संस्थान ने अपने सभी प्रपत्रों, मोहरों एवं सूचना बोर्डो का द्विभाषी/त्रिभाषी करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इनके अतिरिक्त प्रत्येक तिमाही में निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिन्दी से जुड़े कार्यों का अवलोकन होता था।

सन 2012 में मेरे स्थानांतरण के उपरांत डॉ. विकास राणा की अगुवाई में संस्थान निरंतर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अग्रसर रहा। वर्तमान में डॉ. विपिन प्रकाश और शंकर शर्मा का हिन्दी के प्रचार-प्रसार का निरंतर प्रयास आई.सी.एफ.आर.ई. के वैबसाइट पर परिलक्षित होता रहता हैं।

हरित खाद

कुंतला नेउग बरुआ

अनुसंधान अधिकारी

कृषि क्षेत्रों में उर्वरा शक्ति बनी रहने के लिए और मिट्टी की संतुलन के लिए रसायनिक खाद की जगह जैविक खादों का प्रयोग श्रेयस्कर है। हरित खाद एक प्रकार जैविक खाद है। हरित खाद बनाने के लिए फलीदार फसल, बंजर भूमि में उपलब्ध अपतृण आदि उपयोग किया जा सकता है। इन झाँड़ियों का कंड कोमल होना चाहिए और कम समय में मिट्टी के साथ मिल जाना चाहिए। झाँड़ियों का कोमल कांड छोटे-छोटे टूकड़ों में काट कर जमीन में मिला देने से नाइट्रोजेन का परिमाण बढ़ जाता है और मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ जाती है। हरित खादों का उत्पादन बहुत कम खर्च से होता है। साधारणतः हरित खादों में व्यावहृत विभिन्न झाड़ियों की प्रजाति है, क्रटालेरिया, अड़हर, सेसबानिया आदि। सेसबानिया एक अति उत्तम हरित खाद है। इसमें नाइट्रोजेन का परिमाण 0.62% और इसका व्यवहार करने से धान की फसल अधिक होती है। हरित खादों का प्रयोग मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। भूमि के संरचना में सुधार, जल धारण क्षमता वृद्धि, जीवाणुओं की क्रिया में वृद्धि आदि हरित खाद का महत्वपूर्ण अवदान है। इससे फसल का उत्पादन 30% से 50% वृद्धि होता है और स्वास्थ्य के लिए भी गुणकारी होती है। एक माह पहले टारमिनेलिया, पंगामिया, गमार आदि वृक्ष के पलिया सुखाकर कृषि भूमि में फसल लगाने से पहले मिला देने से अधिक उर्वरता बनी रहती है।

कहानी किताब की

वैष्णवी बरठाकुर

कार्मेल स्कूल,

सुपुत्री: डॉ. निजरा दत्त बरठाकुर

नमस्ते दोस्तों!

मैं हूँ किताब जो बाज़ारों में बिकता है। मेरी जीवनी इतनी भी छोटी नहीं हैं कि मैं उसे खुद महसूस न कर पाऊँ। मुझमें छिपी होती है ढेर सारी बातें, कभी परियों की कहानियाँ तो कभी भूत-प्रेत की बातें। सिर्फ इतना ही नहीं और बहुत सारी बातें होती है मुझमें। पूरी दुनिया की बातें मुझमें समेटी होती है। लेकिन दुकान में बैठकर इतना ऊब जाती हूँ कि मन करता है झट से किसी के घर चली जाऊँ। फिर एक वक्त आता है जब एक औरत की निगाहें मुझपर पड़ती है और वो मुझे दुकानदार से खरीद लेती है। घर लेकर वो मुझे पढ़ती है और फिर पढ़कर दूसरें किताबों के बीच रख देती है। फिर एक दिन उस औरत ने मुझे पूरा पढ़ लिया। बहुत दिन बीत गये और एक कबाड़ीवाला आया। उस औरत ने मुझे अन्य किताबों के साथ कबाड़ीवाले को बेच दिया। मुझे बहुत बुरा लगा। कबाड़ीवाले ने मुझे चने बेचने वाले को बेच दिया और मेरे पन्नों को फाड़कर चने खाने के लिए प्रयोग किया जाने लगा। चने खाकर लोग मुझे इधर-उधर फेंकने लगे। राही मेरे ऊपर से अपने गंत्यव्य स्थल को जाते। गाय-भैंस भी मुझे चारा समझकर निगल जाते। वह न हुआ तो हवा और पानी मुझे समाप्त कर देते। दोस्तों, यही होती है मेरे जीवन का अंत।

प्यार की लड़ियाँ

ईमान और प्यासे कहा था
मैं तुम से ही प्यार करता हूँ
और करता रहूँगा
फिर हुई दिल की अद्ल-बदल
और फिर वादे किए गए
वादे निभाने का एक साथ
मरते दम तक हाथों में हाथ
ये घड़ियां
ये प्यार की लड़ियाँ
चमकते रहेगें जैसे ये सितारें
लेकिन एक दिन नैया प्यार की
डगमगाने लगी
श्री रूप के झोकों में
लड़ियाँ और हुवा तितर बितर
कहीं खुली और कहीं उलझ गया
नहीं प्यार चाहिए जिसे
कोशिश की समझने पूरी
सोने चाँदी ने बहा ले गया उसे
धन दौलत निगल गया
मैं भौंचक्का रह गया
एक और लड़ियाँ पकड़ली
फिर प्यार की हुई जीत
खुशी छाई हम पर
लेकिन धनवान प्यार
रही है टहल
सुनसान है महल
सिसकियाँ लेते हुए अकेले
काश पैसे खरीद सके
साथ देने को उसे प्यार

ध्रुब गुरुङ

वैज्ञानिक–सी

आसमान

झील-मिल झील-मिल
सूरज चमके
आसमान भी खिले-खिल।

रात को चाँद और तारे निकल आते,
और सवेरे सुरज आकाश में छा जाते।

जब घने बादलों के बीच
सुरज ढक जाता
तब अन्धेरा छा जाता।

उमड़-घुमड़ जब बादल गाते,
तब बारिष खुशी-खुशी टपकते॥

इचिका रंजन

सुपुत्री: श्रीमती रिताश्री खनिकर दत्त

स्कूल: डॉन बॉस्को हाइ स्कूल, लिचुबारी

हिन्दी एक मिठास है

हिन्दी एक मिठास है,
इसलिए इसमें कुछ खास है
हिन्दी हमें आती है
इसकी मिठास बहुत भाती है
शिष्टाचार हमें सिखाती है।

हर पल हमें याद दिलाती है
हिन्दुस्तान है हमारा हिन्दुस्तान है हमारा।

इसलिए मिट्टी से भी ये खुशबु आती है
फिर भी कभी-कभी हमसे दुर चली जाती है
सोचता हूँ अक्सर क्यू ये दूर चली जाती है
पर फिर ये अगले पल पास आ जाती है
हिन्दी हमें आती है, हिन्दी हमें आती है।

म. निशार आलम
अनुसंधान सहायक

माँ

माँ बिन जीवन नरक समान
इनका करें सदा सम्मान
माँ सा न कोई जग में महान।

मिटाते है वह मन का अज्ञान
जिसने दिया इतना जीवन महान
करते हैं हम उनको सादर प्रणाम।।

तन्वी काश्यप

स्कूल: कार्मेल स्कूल, जोरहाट
सुपुत्री: श्री अरबिंद डेका

संवैधानिक प्रावधान (राजभाषा हिन्दी)
भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित भाग-17

अध्याय 1--संघ की भाषा

अनुच्छेद 120. संसद् में प्रयोग की जाने वाली भाषा - (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद् में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ-भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

(2) जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो "या अंग्रेजी में" शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो ।

अनुच्छेद 210: विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा - (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान-मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा

परंतु, यथास्थिति, विधान सभा का अध्यक्ष या विधान परिषद् का सभापति अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो पूर्वोक्त भाषाओं में से किसी भाषा में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

(2) जब तक राज्य का विधान-मंडल विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो " या अंग्रेजी में " शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो :

परंतु हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय और त्रिपुरा राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में, यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले"पंद्रह वर्ष" शब्दों के स्थान पर "पच्चीस वर्ष" शब्द रख दिए गए हों :

परंतु यह और कि अरूणाचल प्रदेश, गोवा और मिजोरम राज्यों के विधान-मंडलों के संबंध में यह खंड इस प्रकार प्रभावी होगा मानो इसमें आने वाले " पंद्रह वर्ष " शब्दों के स्थान पर " चालीस वर्ष " शब्द रख दिए गए हों ।

अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा--

(1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

(2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था:

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद् उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात्, विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 344. राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति--

(1) राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

(2) आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को--

(क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग,

(ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों,

(ग) अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा,

(घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप,

(ड़) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

(3) खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा।

(4) एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

(5) समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1)के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

(6) अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

अध्याय 2- प्रादेशिक भाषाएं

अनुच्छेद 345. राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं--

अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगाः

परंतु जब तक राज्य का विधान-मंडल, विधि द्वारा, अन्यथा उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

अनुच्छेद 346. एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा--

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी: परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध--

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

अध्याय 3 - उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा--

(1) इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक--

(क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,

(ख) (i) संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

(ii) संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के ,और

(iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों

(2) खंड(1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगाः

परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

(3) खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने,उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अनुच्छेद 349. भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया--

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् ही देगा, अन्यथा नहीं।

अध्याय 4-- विशेष निदेश

अनुच्छेद 350. व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा--

प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं--

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी--

(1) भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

(2) विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे,

राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश--

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

अँग्रेजी	हिन्दी
Rain Forest Research Institute, Jorhat	वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट
Director	निदेशक
Group Coordinator (Research)	समूह समन्वयक (अनुसंधान)
Scientist B, C, D, E…	वैज्ञानिक बी, सी, डी, ई....
Conservator of Forests	वन संरक्षक
Deputy Conservator of Forests	उप वन संरक्षक
Drawing & Disbursing Officer	आहरण एवं संवितरण अधिकारी
Research Officer	अनुसंधान अधिकारी
Store Officer	भंडार अधिकारी
Estate Officer	संपदा अधिकारी
Forest Range Officer	वन रेंज अधिकारी
Head Clerk	प्रधान लिपिक, हेड क्लर्क
Stenographer	आशुलिपिक
Research Assistant	अनुसंधान सहायक
Upper Division Clerk	प्रवर श्रेणी लिपिक
Lower Division Clerk	अवर श्रेणी लिपिक
Technical Assistant	तकनीकी सहायक
Typist	लिपिक
Deputy Ranger	उप रेंजर
Forester	वन दरोगा
Forest Guard	वन रक्षक
Director's Office	निदेशक कार्यालय
Coordinator (Facilities)	समन्वयक (सुविधाएं)
Group Coordinator (Research) Office	समूह समन्वयक (अनुसंधान) कार्यालय
Establishment Section	स्थापना अनुभाग
Account Section	लेखा अनुभाग
Store Section	भंडार अनुभाग
Vehicle Section	वाहन अनुभाग
Library	पुस्तकालय
Information Technology Cell	सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ
Geo-Informatics Laboratory	भू-सूचना विज्ञान प्रयोगशाला
Estate Office	संपदा कार्यालय
Ecology & Biodiversity Division	पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता प्रभाग
Silviculture and Forest Management Division	वन संवर्धन एवं प्रबंधन प्रभाग
Biotechnology and Genetics Division	जैवप्रौद्योगिकी एवं आनुवंशिकी प्रभाग
Shifting Cultivation Division	झूम खेती प्रभाग
Forest Protection Division	वन रक्षण प्रभाग

Bio-prospecting & Indigenous Knowledge Division	जैवपर्वेक्षण एवं स्वदेशी ज्ञान प्रभाग
Forestry Extension Division	वानिकी विस्तार प्रभाग
Put up for your kind perusal please	आपके अवलोकनार्थ सविनय प्रस्तुत
Put up for your kind perusal and necessary action please	आपके अवलोकनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु सविनय प्रस्तुत
Put up for necessary guidance	आवश्यक दिशानिर्देश के लिए सविनय प्रस्तुत
Put up for your kind approval	आपके अनुमोदनार्थ सविनय प्रस्तुत
Put up to obtain your kind signature please	आपके हस्ताक्षर हेतु सविनय प्रस्तुत
This is put up to the Director for his kind perusal and needful action please	कृपया अवलोकनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु निदेशक के सम्मुख प्रस्तुत
The proposed tour programme may kindly be forwarded for approval	प्रस्तावित यात्रा कार्यक्रम कृपया अनुमोदनार्थ अग्रेषित किया जाए
The tour programme as proposed may kindly be approved	यथाप्रस्तावित यात्रा कार्यक्रम कृपया अनुमोदित किया जाए
May kindly be approved	कृपया अनुमोदित किया जाए
May kindly be considered	कृपया विचार किया जाए
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास किया जा सकता है
May kindly be sanctioned	कृपया मंजूर संस्वीकृत किया जाए
Notes and orders at page …… may please be seen in this connection	इस संबंध में पृष्ठ ...... पर दिए गए आदेशों और टिप्पणियों को कृपया देख लिया जाए
Please refer note sheet page no…..	कृपया सन्दर्भ हेतु नोट शीट पृष्ठ संख्या .... देखें
Forwarded	अग्रेषित
Recommended	संस्तुत, सिफ़ारिश की जाती है
Approved	अनुमोदित
Office Circular	कार्यालय परिपत्र
Office Order	कार्यालय आदेश
Notice	सूचना
Office Memorandum	कार्यालय ज्ञापन
Advertisement	विज्ञापन
Notice Inviting Tender	निविदा आमंत्रण सूचना
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण पत्र
Research Advisory Group (RAG)	अनुसंधान सलाहकार समूह (अ.स.स.)

'লা খেতি'- স্বাৱলম্বনৰ এক উপায়

ৰাজীৱ কুমাৰ কলিতা
বৈজ্ঞানিক ই

'লা' হ'ল এবিধ বিশেষ ধৰণৰ পতঙ্গৰ বিশেষকৈ স্ত্ৰীপতঙ্গৰ গাৰ পৰা ওলোৱা এবিধ আঠাজাতীয় নি:সৰণ অৰ্থাৎ Resinous Exudation। এই পতঙ্গবিধক কোৱা হয় লেচিফাৰ লাকা"। এই পতঙ্গ বিধে কিছুমান গছৰ কোমল অংশৰ পৰা ৰস শুহি খাই জীয়াই থাকে। এই গছবোৰ হ'ল কুসুম, বগৰী, পলাশ, ৰহৰ মাহ আদি। লায়েই হৈছে প্ৰাণী দেহৰ পৰা ওলোৱা একমাত্ৰ ৰেজীন। লাত প্ৰায় ৬৮% ৰেজীন, ৬% মম, ১-২% ৰং থাকে।

ভাৰত, বিহাৰ, ঝাৰখণ্ড, পশ্চিমবংগ, মধ্যপ্ৰদেশ, ছটিছগড়, পূৱ মহাৰাষ্ট্ৰ আৰু উৰিষ্যাৰ কিছু অংশত প্ৰাকৃতিক ভাৱে লা পোৱা যায়। আমাৰ উত্তৰ পূৰ্ব্বাঞ্চলৰো কিছুঅংশত লা পোৱা যায়।

লাৰ দুটা জাত আছে – এটাক কোৱা হয় 'কুচুমী' আৰু আনটো হ'ল 'ৰংগিনী'। কুচুমী জাত বোৰে ছমাহত ইহঁতৰ জীৱন চক্ৰ সম্পূৰ্ণ কৰে আৰু ৰংগিনী জাতটোৱে নিৰ্দ্দিষ্ট সময়ত জীৱন চক্ৰ সম্পূৰ্ণ নকৰি ইয়াৰ অলপ ইফাল সিফাল কৰে। ইহঁতে কুচুমী জাতৰ পতঙ্গবোৰে বেয়া পোৱা গছবোৰহে বেছি পচন্দ কৰে।

কুচুমী জাত বছৰত দুবাৰ চপাব পাৰি – জুন-জুলাই আৰু জানুৱাৰী-ফেব্ৰুৱাৰী। আনহাতে ৰংগিনী জাত মে-জুন আৰু অক্টোবৰ-নৱেম্বৰ মাহত চপাব পাৰি। লা পতঙ্গ বৰ সুক্ষ্ম প্ৰাণী। মতা পলুবোৰ ৰঙা বৰণৰ আৰু দীঘলে ১.২ – ১.৫ মি.মি. মান হয়। সিহঁতৰ সৰু সৰু চকু আৰু এন্টিনা থাকে। মাইকীবোৰ নাচপতি আকাৰৰ হয় আৰু দীঘলে ৪-৫ মি.মি. মান হয়। জীৱন চক্ৰ কাল হ'ল ছমাহ। প্ৰথমে কণী পাৰে, কণীৰ পৰা পলু, তাৰ পিচত লেটা আৰু একেবাৰে শেষত প্ৰাপ্তবয়স্ক পতঙ্গ হয়।

এজনী মাইকী লা পতঙ্গই ২০০-৫০০ টা মান কণী সৃষ্টি কৰে। কনীবোৰ মাকৰ পেটতে সম্পূৰ্ণ ৰূপে বিকশিত হয়। কণীখিনি পৰাৰ কিছুসময়ৰ পিছতে কণী ফুটি ৰঙচুৰা পলুবোৰ বগাই ওলাই আহে।

এইবোৰ পাঁচ সপ্তাহ মান একেলগে থূপ বান্ধি থাকে আৰু সুবিধাজনক ঠাই পালে স্থায়ীভাৱে থাকিবলৈ ধৰে। এই দৰে প্ৰতিবৰ্গ ইঞ্চি গছৰ গা গছ বা ঠাল ঠেঙুলীত ২০০-৩০০ পতঙ্গই থিতাপি লৈ।

স্থায়ীভাৱে থিতাপি লোৱাৰ এদিন বা দুদিনৰ পিছৰ পৰাই পতঙ্গবোৰে প্ৰথমে মম জাতীয় কিছুমান নি:সৰণ উলিয়ায় আৰু পাছলৈ ৰেজিন জাতীয় নি:সৰণ উলিয়ায়। পলুবোৰে প্ৰায় তিনিবাৰকৈ মোট সলায় আৰু তাৰ পিছত প্ৰাপ্তবয়স্ক পতঙ্গলৈ ৰূপান্তৰ হয়। আঠ সপ্তাহ মানত মতা আৰু মাইকী পতঙ্গবোৰে প্ৰাপ্তবয়স্কতা অৰ্জন কৰে যদিও মতা পতঙ্গবোৰহে পাখি গজে।

মাইকীবোৰ মতাতকৈ অলপ ডাঙৰ আৰু ঘূৰণীয়া আকৃতিৰ হয় আৰু এইবোৰে গছজোপাতে থামোচ মাৰি ধৰি থাকে। সাধাৰণতে লা জংঘলৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা হয় কিন্তু উন্নত তথা বিজ্ঞান সন্মত পদ্ধতি অৱলম্বন কৰি লাৰ খেতি কৰিব পাৰি। *Flemingia semialata* নামৰ এবিধ গছৰ উন্নত কৃষি পদ্ধতি অৱলম্বন কৰি তাত লা পতঙ্গ মেলি দি অৰ্থনৈতিক ভাৱে লাভৱান হোৱাকৈ লাৰ খেতি কৰিব পাৰি। এই পদ্ধতিৰে প্ৰতি হেক্টৰত প্ৰায় ৮ হাজাৰ মান গছ পুলি লগাব পাৰি। *F. semialata* গছ বিধ আমাৰ মাখিয়তি গছৰ নিচিনা, প্ৰায় তিনি মিটাৰ ওখ হয়। বীজৰ পৰা এই উদ্ভিদৰ খেতি কৰিব পাৰি। শাৰী-শাৰীকৈ এই উদ্ভিদৰ পুলিবোৰ লগাব পাৰি। দুশাৰীৰ মাজৰ দুৰত্ব হ'ল ০.৭৫ মিটাৰ আৰু দুটা পুলিৰ মাজৰ দুৰত্ব হ'ল ১ মিটাৰ।

প্ৰাকৃতিক পৰিৱেশত পতঙ্গবোৰে নিজে নিজে এজোপা গছৰ পৰা আন এজোপা গছক আক্ৰমণ কৰে। কিন্তু উন্নত পদ্ধতিৰে কৰা কৃষি কাৰ্য্যত লা লাগি থকা গছৰ ঠাল-ঠেঙুলী বোৰ সৰু সৰুকৈ কাটি নেটৰ মোনাত ভৰাই গছৰ তলৰ অংশত ভালদৰে বান্ধি দিব লাগে। এনে কৰিলে পলু পোকবোৰ লাহে লাহে নেটৰ মোনাৰ পৰা ওলাই আহি গছজোপা আক্ৰমণ কৰে আৰু গছৰ ৰস শুহি ইয়াতে থিতাপি লয়। লাৰ ব্যৱহাৰ বহুল। প্ৰাকৃতিক খাদ্যৰ সংৰক্ষক আৰু প্ৰসাধন উদ্যোগত লাৰ প্ৰয়োগ ব্যাপক। লাৰ পৰা তৈয়াৰ ৰঙৰ চাহিদাও যথেষ্ট আছে। বৈদ্যুতিক উদ্যোগত ইয়াক বিদ্যুতৰ কুপৰিবাহী লেপন হিচাপে তাঁৰ (wire), grinding wheel আদিত ব্যৱহাৰ কৰা হয়। কিছুমান ঔষধৰ কেপচুল বা টেবলেটৰ বাহিৰৰ আৱৰণ টোত লাৰ ব্যৱহাৰ কৰা হয়। খাদ্য সংৰক্ষণ, চকলেট, chewing gum আদিত লা ব্যৱহাৰ কৰা হয়।

লাৰ ব্যৱহাৰ ইমানেই পুৰণি যে ইয়াৰ প্ৰয়োগ সম্পৰ্কে মহাভাৰতটো উল্লেখ আছে। পঞ্চপাণ্ডৱক মাৰিবলৈ কৌৰৱে যি জতুগৃহ সজাইছিল সেইয়া লাৰে বনোৱা বুলি উল্লেখ আছে।

লাৰ খেতি কৰি অৰ্থনৈতিক ভাৱে লাভান্বিত হোৱাৰ সম্পূৰ্ণ সুযোগ আছে। ভাৰতত এজোপা কুচুম গছৰ পৰা ৬-১০ কেজি আৰু বগৰী গছৰ পৰা ১.৫-৬ কেজি আৰু পলাশ গছৰ পৰা ১-৪ কেজি লা প্ৰতি ছমাহত আহৰণ কৰিব পাৰি। যদি উন্নত পদ্ধতিৰে খেতি কৰা হয়, প্ৰতি হেক্টৰ মাটিত প্ৰতি বছৰে এজন কৃষকে প্ৰায় ... পাৰে।

উপলব্ধিৰ *Experiment*

নিৰেন দাস
গৱেষণা সহায়ক

জীৱনটোক আগুৱাই নিবৰ কাৰণে সদায় আগফালে দৃষ্টি ৰাখিব লাগিবই যদিওঁ কেতিয়াবা কেতিয়াবা প্ৰয়োজন হয় নিজকে নিজৰ দৃষ্টিত উপলব্ধি কৰাৰ। ইয়াৰ কাৰণে প্ৰয়োজন হয় পিছফালে ঘূৰি এৰি অহা জীৱনটোৰ পাতবোৰ লুটিয়াই আশা-নিৰাশা, হাহি-কান্দোন, ইচ্ছা-অনিচ্ছা, পোৱা-নোপোৱাৰ সমষ্টিটোক জুকিয়াই উপলব্ধি কৰাৰ। এৰি অহা জীৱনৰ এই সমষ্টিটোক উপলব্ধি কৰি হেনো ভুলবোৰ শুধৰাব পাৰি আৰু জীৱনটোক সুন্দৰকৈ আগবঢ়াই নিব পাৰি। ই হেনো ভাল মানুহৰ লক্ষণ।

মোৰ নিচিনা একো কৰিব নোৱাৰা মানুহেও উপলব্ধি কৰিব পাৰে নে নোৱাৰে আৰু যদি পাৰে কি ধৰণে পাৰে তাকে কৰিববৰ কাৰণে Experiment এটাত নামি পৰিলো। এৰি অহা জীৱনৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ সময়বোৰক যদি একোটা ষ্টেচন বুলি ধৰি লওঁ আৰু জীৱনটোক একোখন ৰেল বুলি ধৰিলে বুজিবলৈ সহজ হব যেন লাগিছে। জীৱন নামৰ ৰেলখনে ৪০ টা বছৰৰ ষ্টেচন পাৰ হৈ সেই ষ্টেচনবোৰত পোৱা মানুহৰ সুখ-দুখ,আশা-নিৰাশা, হাহি-কান্দোন, ইচ্ছা-অনিচ্ছা, পোৱা-নোপোৱাৰ ৰং বোৰ সানি আজি ২০১৫ চনৰ ষ্টেচনটোত উপস্থিত হৈছেহি। মই এতিয়া বৰ্তমানৰ ষ্টেচনটোত নামি এৰি অহা ষ্টেচনবোৰৰ তথ্যবোৰ সোঁৰৰাই মনৰ Software টোত সুমুৱাই উপলব্ধি কৰিব লাগিব। বৰ টান যেন লাগিছে, তথাপিও এইখিনি কৰি যদি ভাল মানুহ হ'ব পাৰি চেষ্টা এটা কৰোঁচোন।

পৰীক্ষা নং ১ :- চকুমুদি মনটোক ঠেলি দিলোঁ বহুদূৰ পিছলৈ আৰু এৰি অহা জীৱনৰ সময়ৰ ষ্টেচনবোৰৰ তথ্য বোৰ মনৰ Software টোত সুমুৱাই নিজক আৱৰি ৰখা আৱৰণটোক টোকৰ মাৰি

(Click কৰি) অপেক্ষা কৰিলোঁ ফলাফলৰ কাৰণে। মনৰ আকাশত কোনো ধৰণৰ ফলাফলৰ প্ৰতিবিম্ব নেদেখি হতবাক হ'লো।

পুনৰ পৰীক্ষা কৰিলোঁ এৰি অহা জীৱনৰ সময়ৰ ষ্টেচনবোৰৰ তথ্য ঠিকেইটো আছে। বহুত মনোযোগেৰে উপলব্ধি কৰিবলৈ চেষ্টা কৰিলো কেনেধৰণৰ বাতৰি (Message) নিজৰ আৱৰণটোৱে মনটোলৈ দিব চেষ্টা কৰিছে। বহুত চেষ্টা কৰিও বিফল হ'লো। তথাপি নিজৰ আৱৰণটোত মৰা টোকৰটোৰ শব্দৰ পৰাই বহুত কষ্ট কৰি উপলব্ধি কৰিবলৈ চেষ্টা কৰিলোঁ চৌপাশৰ পৰিৱেশ, জীৱ-জন্তু,মানুহৰ অনুভূতিৰ প্ৰতিবিম্ব আৰু নিজৰ উপলব্ধিৰ মাজত যোগাযোগ (Link) কৰিব পৰা নাই। পৰীক্ষা নং ২ :- এইবাৰ নতুন উদ্যমেৰে এৰি অহা জীৱনত সময়ৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ ষ্টেচনবোৰত লগ পোৱা মানুহৰ সুখ-দুখৰ প্ৰতিবিম্ব মোৰ মনটোত কি ধৰণে পৰিছিল তাৰ তথ্যও সম্পূৰ্ণৰুপে মনৰ Software টোত দিবলৈ চেষ্টা কৰিলোঁ। তথ্যবোৰ দিয়াৰ আগতে মনটোক Restart কৰি Software টো যাতে অধিক কৰ্মক্ষম হয় তাৰ কাৰণে সকলো ধৰণৰ চেষ্টা কৰিলোঁ। উপলব্ধি আৰু মনৰ Link টো পুনৰ পৰীক্ষা কৰি এইবাৰ নিজৰ আৱৰণটোক টোকৰ মাৰি অধিক আগ্ৰহেৰে ফলাফলৰ কাৰণে অপেক্ষা কৰিলোঁ ।ফলাফলে এইবাৰ সচাঁকৈয়ে হতভম্ব কৰিলে।মনৰ মনিটৰত display হ'ল unable to link .... Invalid source. সৰ্বনাশ! এৰি অহা সময়ৰ কোনোবা এটা ষ্টেচনত মনটো থাকি শৰীৰটো গুচি আহিল নেকি? Size, shape নথকা সময়বোৰক সুন্দৰকৈ চোলা-কাপোৰ পিন্ধাই আমিবোৰে যে বিহু বুলি ৬ মাহ আনন্দ-ফুৰ্তি কৰোঁ, মনৰ Software টোৱে বুজি পোৱা নাই নেকি? খং উঠিল, এৰি অহা সময়ৰ ষ্টেচনবোৰত আমাৰ মনটোৱে যে আকাশ, তৰা, সূৰ্য, চন্দ্ৰ আদিবোৰক হত্যা বা অপকাৰ কৰাৰ বাহিৰে সকলো ধৰণৰ চিন্তা কৰি পেলালোঁ, ই বুজি পোৱা নাই নেকি? মোৰ সঁচাকৈয়ে বৰ ভয় লাগিল। নিজৰ আৱৰণটোৱে মনটোলৈ যদি কোনোধৰণৰ বতৰা প্ৰেৰণ নকৰে মই উপলব্ধি কৰিম কেনেকৈ। আৰু যদি উপলব্ধি কৰিব নোৱাৰো ভাল মানুহৰ দৰে জীৱনটোক সজাই আগুৱাই যাম কেনেকৈ? এৰি অহা জীৱনৰ সময়ৰ ষ্টেচনবোৰৰ কোনটোত মনটো থাকি গ'ল মই কেনেকৈ জানিম। জানিলোৱেই যেনিবা উদ্ধাৰ কৰি লৈ আনিম কেনেকৈ? কিবা এক ধৰণৰ বিষাদৰ আৱৰণে আগুৰি ধৰিলৱেও, চিন্তা কৰিলো পৰীক্ষা নং ৩ পুনৰ উপলব্ধিৰ কাৰণেই কৰিম নে, হেৰুৱা মনটোক উদ্ধাৰ কৰিবৰ কাৰণে?

Continued to next issue...

লতা বাঁহ

দেৱজিত নেওঁগ
গৱেষণা সহায়ক

লতা বাঁহ (মেল'কেলামাচ ক'মপেক্টিফ্লৰা) বেকাবেকী কাণ্ড যুক্ত এবিধ লতাজাতীয় সৌন্দৰ্যবৰ্ধক বাঁহ। মূল কাণ্ডৰ বৰণ পাতল চাই বৰণীয়া, কাণ্ড মজবুত, নিফুক, খহতা আৰু গাঁঠি উখহা হয়। সেই বাবে অন্য গছত বগাই যোৱাত সুবিধা হয়। প্ৰধান কাণ্ডৰ দৈৰ্ঘ্য ১০ – ৩০ মিটাৰ ব্যাসাৰ্ধ ১.৫ – ২.৫ চেন্টিমিটাৰ আৰু পাব বোৰ ৩০-৬০ চেন্টিমিটাৰ দীঘল হোৱা দেখা যায়। অসমৰ কাছাৰ জিলা (ভূৱন পাহাৰ), ডিগবৈ সংৰক্ষিত বনাঞ্চলত এই প্ৰজাতিৰ বাঁহ কম পৰিমাণে পোৱা যায়।

অবান্তৰ

নয়নমণি শইকীয়া
জে. আৰ. এফ

কি হ'ল! আজি দেখোন এই নেমুজোপা মৰহি আছে, যোৰাকলিটো মই নিজে নেমু চিঙিছিলো; কি হ'ল আকৌ বুলি কৈ মাকন খুৰীয়ে একেবাৰে বোৱাৰীয়েক ৰাখীক চিয়ঁৰি উঠিল। বেচেৰী ৰাখী- বিয়া হৈ অহা মাত্ৰ তিনিমাহ হৈছেহে, ঘৰখনৰ একো উৱাদিহেই পোৱা নাই। বৰ অমায়িক আৰু নিৰ্জু প্ৰকৃতিৰ ছোৱালী তাই। শাহুৱেকৰ চিয়ঁৰ শুনি 'কি হ'ল মাঁ' বুলি একেবাৰে উধাতু খাই দৌৰি পিছফাল পালেহি, হাতত ভাত বনাই থকা হেঁতাখন। অ' কেনেকে হ'ল জানো পাই মা, মইও আচৰিত হৈছো। দুইজনীয়ে ভাবি ভাবি ওৰ নাপালে। খুৰিদেউৰ মুখখন একেবাৰে সেমেকী গ'ল। বুজিছা ৰাখী এইটো খুব বেয়া লক্ষণ। মোৰ কিবা মনটো গোন্ধাইছে দেখোন। ৰাখীয়েনো কি ক'ব, কি নক'ব ভাবি মূৰ জোকাৰি থাকিল।

হ'ব হ'ব ৰাখী, যোৱা ভাতটো বাঢ়ি দিয়াগৈ, মোৰ পলমেই হ'ল আজি।

খুৰীদেউ যোৱাৰ পাছত ৰাখীয়ে কাম বন কৰি আজৰি হৈ বিচনাতে পৰি কথাটো ভাবি থাকিল। কালিনো কোন আহিছিল, কোনোবাই কিবা কৰিলে নেকি বাৰু? নহ'লেনো শাহুৱেকে কিয় ক'লে যে তেওঁৰ মনটো গোন্ধাইছে বুলি। হ'ব, আজি এওঁ কামৰ পৰা আহিলে কথাটো ক'ব লাগিব। তাইৰ এবাৰ পেহীয়েক নিভাই কোৱা মনত আছে, কোনোবাই বোলে কাৰোবাৰ বেয়া কৰিবলৈ কিবা-কিবি বাৰীত পুতি থয়, বিৰা মেলে। ঘৰৰ কিবা অমংগল হ'বলৈ হিংসাতে বোলে তেনেকুৱা কৰে। ক'তনো এনে বেয়া কামৰ উৎপত্তি হ'ল। কিমান দূৰ বা সঁচা/মিছা এইবোৰ। মানুহবোৰৰ যে আৰু কাম নাই। সঁচাকৈ এনে মানৱ এই পৃথিৱীত আছেনে? কি হ'ব বাৰু যদি পাতিছে নিতাই পুখুৰীত। সঁচা হয়। আজি আকৌ ৰাখীৰ গিৰীয়েক ৰাজীৱ পুৱাতে অফিচ গ'ল। কিবা বোলে সজাগতা সভা সেয়ে পুৱা সাত বজাতে অফিচৰ গাড়ীৰে লৈ গ'লহি। ৰাজীৱ এজন জনস্বাস্থ্য বিভাগৰ কৰ্মচাৰী। ৰাখীৰ এতিয়াও ভাবিলে লাজ লাগে যে প্ৰথম দিনা কেনেকৈ ৰাজীৱে তাইক বিবাহৰ প্ৰস্তাৱ দিছিল। তাই আছিল পৰিয়ালৰ কনিষ্ঠ জীয়ৰী। তাইৰ ওপৰত চাৰিজন ককায়েক। চাৰিজন ককায়েকৰ উপস্থিতিত তাই প্ৰেম কৰাটো অলিক কল্পনা। ৰাজীৱৰ প্ৰস্তাৱত তাই একো উত্তৰ দিব পৰা নাছিল।

চাওঁতে-চাওঁতে তাইৰ বিয়া হোৱা প্ৰায় তিনিমাহেই হ'ল। এতিয়াও তাই ঘৰখনৰ লগত সম্পূৰ্ণ মিলিব পৰা হোৱাই নাই। ঘৰখনৰ বহুত কথা আৰু কাৰ্য্য তাইৰ বাবে এতিয়াও অচিনাকী। ৰাতিপুৱা তাই শাহুৱেকৰ আচৰণ দেখি অলপ সময়ৰ বাবে স্তম্ভিত হৈ গৈছিল। তাইৰ মনত এটাই চিন্তা হৈছিল কিযানিবা শাহুৱেকে তাইক গালি দিয়ে বা কিবা কয়। তাইক বিয়াৰ আগতে মাকে কৈছিল, "মানু তই গিৰিয়েৰৰ ঘৰত গৈ সকলোকে আপোন কৰি লবি। ডাঙৰে কিবা ক'লে মনে মনে থাকিবি, মুখত নামাতিবি, খঙ উথিলেও ধৈৰ্য্য ধৰিবি। যিটো নাজান শাহুৱেৰৰ পৰা শিকি ল'বি। তোৰ গিৰিয়েৰৰ আৰু ঘৰখনৰ উন্নতি বহুক্ষেত্ৰত তোৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰিব। চাবি আকৌ যাতে আমি তোৰ বিষয়ে একো বেয়া শুনিব নাপাওঁ"।

আজি ৰাতিপুৱা হোৱা ঘটনাটোৱে তাইৰ মাকে কোৱা কথাবোৰ মনত পেলাই দিলে। তাইৰ মনটো উগুল-থুগুল লাগি গৈছিল গধূলিলৈকে। ৰাজীৱ অফিচৰ পৰা ঘূৰি অহাৰ পাছত কথাটো উলিয়াম বুলি মাকন খুৰীয়ে ৰাখীক ক'লে। বুজিছা ৰাখী অহা মঙলবাৰে ৰাজীৱক অফিচ চুটি লৈ হলেও শিলিখাজানৰ ডিম্বেশ্বৰ বেজৰ ঘৰলৈ যাবলৈ ক'ম। মোৰ যে আজি গোটেই দিনটো স্কুলত মনেই নবহিল।

লগৰ ডেকানীক কলো। তেওঁৱেই মোক উপায়টো দিছে। জানা ৰাখী ডেকানীৰ কেইবছৰমান খুব গা বিষ হৈ আছিল। কোনোবাই বোলে তেওঁক যাদুমন্ত্ৰ কৰিছিল। কিমান ডাক্তৰক দেখুৱালে, নাই ভালেই নহ'ল। তাৰ পাছত তেওঁক কোনোবাই উপদেশ দিলে শিলিখাজানৰ ডিম্বেশ্বৰ বেজৰ কথা। তেওঁৰ ঔষধ লৈ ডেকানী নিৰাময় হ'ল। মুঠতে ৰাখী তুমিও কবাচোন ইয়াক তালৈ যাবলৈ। অফিচ চুটি লৈ হ'লেও সি যাবই লাগিব।হ'ব মা মই ক'ম – আপুনি চিন্তা নকৰিব। ৰাখীয়ে কিন্তু বৰ বেছি এটা এইবোৰ বিশ্বাস নকৰে। তাতে তাই বিজ্ঞানৰ স্নাতক ছাত্ৰী। তথাপিও মাকে দিয়া উপদেশকে মানি শাহুৱেকৰ কথাত হয়ভৰ দিলে।

অ' সোন তই আহিলি, যা তই গা পা ধুই আজৰি হৈ ল। তোৰ লগত মোৰ অলপ দৰকাৰী কথা আছে। মাকৰ কথাৰ কোনো উত্তৰ নিদি ৰাজীৱে হাতত অনা টোপোলাতো মাকক দি গুছি গ'ল।
হেৰা বোৱাৰী, ইয়াৰ কি হ'ল হয়, একো যে নক'লে মুখেৰে। ইয়াৰ কিবা থং উঠি আছে নেকি? নাজানো নহয় মা, ভাগৰুৱা ছাগে। বুজিছা ৰাখী আজি কথাটো নুলিয়াওঁ। কালিলৈ ৰাতিপুৱাই ক'ম তাক নহ'লে।
মা কি হ'ল কচোন, কিনো দৰকাৰী কথা আছিল তোৰ? বুজিছ ৰাজীৱ কোনোৱাই আমাৰ ঘৰত কিবা যাদুমন্ত্ৰ কৰিছে। ন-কৈ বোৱাৰীজনী অহা দেখি ছাগে কোনোবাই হিংসাতে আমাৰ ঘৰখনৰ অমংগল কৰিবৰ বাবেই এইবোৰ কৰিছে যেন লাগিছে। আমাৰ পিচফালৰ নেমুজোপা আজি ছাগে চোন যা একেবাৰে মৰি যোৱাৰ নিচিনাকৈ জ্বলি গৈছে আৰু গছজোপাৰ তলৰ ঘাঁ বন বোৰো বেলেগ হৈ যোৱা যেন লাগিছে। বুজিছ সোন, মোৰ বৰ চিন্তা হৈছে, তই অহা মংগলবাৰে শিলিখাচুকলৈ যাবি আৰু ডিম্বেশ্বৰ বেজৰ ওচৰত চোৱাই আহিবি। মই মৰিলে একো নহয়, কিন্তু তই আৰু বোৱাৰী .... এই বুলি কৈ মাখন খুৰীয়ে চকুপানীৰ নৈ বোৱাই দিলে।
ৰাজীৱে এইবাৰ ৰাখীক ক'লে, ৰাখী তুমি কিবা কবানেকি এই বিষয়ে। ৰাখী অলপ অচৰিত হ'ল ৰাজীৱৰ কথাত।

তাই কি ক'ম নক'ম ভাবি থাকোতেই ৰাজীৱে দুই জনীকে ক'বলৈ ধৰিলে চোৱা মা, চোৱা ৰাখী, আমি এতিয়া একবিংশ শতিকাত আছো। আজিৰ মানুহ গৈ মংগল গ্ৰহ পালেগৈ আৰু তোমালোক এতিয়াও ক'ৰবাতে আছা। মই ভবা নাছিলো যে, মোৰ মা আৰু পত্নীয়ে এনেবোৰ কথাত গুৰুত্ব দিব বুলি। মা, তুমিতো এগৰাকী শিক্ষয়ত্ৰী আৰু ৰাখী তুমি এগৰাকী স্নাতক, তাকো বিজ্ঞানৰ, ছিঃ তোমালোক এতিয়াও!!

মাকে কান্দি কান্দিয়েই ক্ষোভ প্ৰকাশ কৰি ক'লে, তই বেছি আধুনিক নেদেখুৱাবি, তই কি জান? যদি ইমানেই শিক্ষিত দেখুৱাইছ তেন্তে ক'চোন কথা নাই বতৰা নাই কি এজোপা

গছ কালিলৈকে ঠিক আছিল, এটা ৰাতিত এনেকুৱা একেবাৰে মাটিৰ ঘাঁ পৰ্যন্ত মৰহি যাব পাৰে নেকি? চা মই সম্পূৰ্ণ নিশ্চিত কৈ ক'ব পাৰো যে কোনোবাই কিবা কৰিছেই।
মনে মনে থাকা মা, সেইবোৰ একো নহয়, মই গছজোপাত পোক ধৰা দেখি অলপ পোক মৰা ঔষধ চটিয়াইছিলো কালি, পৰিমাণটো অলপ বেছি হ'ল ছাগে। সেইবাবে গছজোপা জ্বলি যোৱাৰ দৰে হ'ল আৰু তাতেই তোমালোক দুই শাহু-বোৱাৰী লগহৈ কথাটো কিবা কৰি পেলালা। তোমালোক মাইকীমানুহ বোৰ যে – নভবা নিচিন্তাকৈ কি কথা কি কৰি পেলোৱা। এইবোৰ একো বেজ-বেজালি নাই। অলপ আপডেট হোৱা মা আৰু ৰাখী তুমিও মাৰ কথা মানি এইবোৰকে চিন্তা কৰি দিনটো পাৰ কৰিলা ন। ৰাজীৱৰ কথাত দুইজনী নিমাত। ৰাখীয়ে কিবা কম ভাবিও একো নক'লে শাহুৱেকে দুখ পাব ভাবি। হ'ব হ'ব মা এতিয়া এইবোৰ পাহৰা আৰু ৰাখী যোৱা মোক খবলৈ কিবা এটা দিয়াগৈ বৰ ভোক লাগিছে। ৰাখী তলমূৰ কৰি হাঁহি হাঁহি ভিতৰলৈ গ'ল। মাকেও বৰ ডাঙৰ বোজা এটাৰ পৰা সকাহ পাই পুতেকক চাই অলপ হাঁহো নেহাঁহোকৈ মোৰ তইঁতলৈ বৰ চিন্তা অ' বুলি ......

"আৰএফআৰআই"ৰ হিৰো

নিলাঞ্জন গোঁহাই
বিশেষ অতিথি

যোৰহাটৰ "বৰ্ষাৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠান", চমুকৈ "আৰএফআৰআই" হৈছে কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ "ভাৰতীয় বন গৱেষণা তথা শিক্ষা পৰিষদ" অধীনস্থ এক প্ৰতিষ্ঠান। আৰম্ভণিতে মেঘালয়ৰ বৰ্ণিহাটত অৱস্থিত এই প্ৰতিষ্ঠান ১৯৯৮ চনৰ পৰা যোৰহাটৰ দাঁতিকাষৰীয়া অঞ্চল "চটাই"ত স্থাপিত হৈছিল। চটাইৰ এই ঠাইখিনি আছিল প্ৰকৃততে এখন ডাঠ হাবি। এই হাবিৰে এক বিশাল অংশৰ এলেকাত কাৰ্য্যালয় আৰু ষ্টাফ কোৱাৰ্টাৰ সমূহ নিৰ্মাণ কৰা হৈছিল যদিও কেম্পাচৰ ভিতৰৰ কিছু অংশ হাবি হৈয়ে ৰৈছিল।

অত্যন্ত সুন্দৰ ভাৱে তৈয়াৰী কাৰ্য্যালয়, লেবৰেটৰী, অডিটৰিয়াম, কমিউনিটি হল, ষ্টাফ কোৱাৰ্টাৰ, বিজ্ঞানী ছাত্ৰাৱাস আদিৰ লগতে কেম্পাচটোত আছিল বিভিন্ন প্ৰজাতিৰ নানান গছ-গছনি। তাৰোপৰি ৰাস্তাৰ আন ফালে থকা বটানিকেল গাৰ্ডেনখনৰো আছে এক নিজস্বতা। সমগ্ৰ ঠাইখনৰ সৌন্দৰ্য্যই যি কোনো লোকৰ মন একেদিনাই মোহি পেলাব পাৰে। যান্ত্ৰিক পৃথিৱীৰ এই ব্যতিক্ৰমী এলেকাৰ কথা লিখি বুজাব নোৱাৰি। ইয়াত কৰ্মৰত হোৱাৰ লগতে পোৱা যায় প্ৰকৃতিৰ সৈতে খাপ খাই চলি থকা এক অপূৰ্ব জীৱন। মানৱ নিৰ্মিত কৰ্মস্থান হ'লেও প্ৰকৃতিৰ অন্যান্য সৃষ্টি সমূহৰো বাসস্থান হৈ ৰৈছিল এই এলেকা। আজিও সাপ, গুঁই আদি প্ৰাণীযে ঠায়ে ঠায়ে বিচৰণ কৰি থকা দেখা যায়।

এইবাৰ আহিছো কাহিনীটোলৈ। ২০০৮ কি ২০০৯ চনৰ এদিনাখনৰ সন্ধিয়াৰ কথা। অ'ফিচৰ কামকাজৰ পিছত নিজৰ কোৱাৰ্টাৰত এজনে চাহৰ কাপত চুমুক দি বাহিৰলৈ চাই আছে। দুৰৈত হাবিৰ অন্ধকাৰ যদিও ঘৰৰ ভিতৰৰ পোহৰ খিড়িকীৰে বাহিৰলৈ ওলাই গৈছে। হঠাৎ যেন ঘৰটোৰ ঠিক তলেৰেই কিবা এটা চয়াময়াকৈ পাৰ হৈ গৈছে। কুকুৰ মেকুৰী বুলি ভাবি তেওঁ বিশেষ গুৰুত্ব নিদিলে।

আন এদিনা খন আন এজনে দেখক ঠিক তেনে এক দৃশ্য। কিন্তু কেম্পাচত চোন কাৰো কুকুৰ নাই আৰু মেকুৰীও চোন ইমান বৃহৎ আকাৰৰ হ'ব নোৱাৰে।
লাহে লাহে দুই এজনে দেখিবলৈ ল'লে কাষৰ হাবিৰ পৰা সন্ধ্যা ভ্ৰমন কৰিবলৈ অহা সেই প্ৰাণী আন কোনো নহয়, কেৱল এক নাহৰফুটুকী বাঘ। সি প্ৰায়ে বিজ্ঞানী ছাত্ৰাৱাসটোৰ পিছফালে থকা নলাটোৰ কাষৰ ফুটপাঠ সদৃশ পকা পথ চোৱাৰে গৈ মুখ্য গে'টৰ চিকিউৰিটী পোষ্ট পাই গৈ আৰু ৰাস্তা পাৰ হৈ বটানিকেল গাৰ্ডেনৰ কাষৰ হাবিলৈ যায়।
অৱশেষত বন বিভাগত খবৰো দিয়া হ'ল। কেম্পাচত বাঘ ওলোৱা কথাটো লাহে লাহে এক চিৰিয়াচ টপিক হ'বলৈ ল'লে। সকলোৱে ভয়ৰ মাজেৰে দিন কটাব লগাও হ'ল। অৱশ্যে শুনামতে বাঘে কাহিলি পুৱা আৰু সন্ধ্যা সময়তে দেখা দিয়ে। পিছে এদিন বটানিকেল গাৰ্ডেনৰ পকাৰ পুখুৰীটোত দিনৰ দহ বজাত পানী খাই আছিল। বাঘকলৈ দুই এখন মিটিং হ'ল। বন বিভাগৰ মানুহ আহি কেম্পাচৰ ভিতৰৰে হাবি চোৱাত পিঞ্জৰা যুক্ত ফাণ্ড পাতিলে। দুই চাৰি বছৰত মুঠ ৬টা নাহৰফুটুকী বাঘ বন্দী হ'ল। পিছে এটা বাঘে পিঞ্জৰাৰ দুৰ্বল ৰড এডাল ভাঙি পলাবলৈ সক্ষম হৈছিল।
বাঘ ধৰা অভিযানৰ এই সমগ্ৰ ব্যৱস্থাত বিশেষ অৱদান আগবঢ়াইছিল এটি সৰু ক'লাবৰণৰ ছাগলীয়ে যাক টোপ হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। কেম্পাচত বাঘ নোহোৱাৰ পিছত সি নিশ্চিন্তমনে গোটেই অ'ফিচটোতে বিচৰণ কৰি ফুৰিছিল আৰু সকলোৰে পৰা যথেষ্ট মৰম পাইছিল। সকলোৱে তাক কিবা কিবি খাবলৈ দিছিল।

এবাৰ ভাবি চাওকচোন মানুহ হৈয়ো সেই হিৰোজনৰ ঠাইত আপুনি কামটো কৰিব পাৰিলেহেতেননে? মইতো তাতেই চেটেপ ইণ্ডিয়া লিমিটেড হৈ গ'লো হয়। আমাৰ হিৰো কিন্তু এই দু:সাহিক অভিযান বিলাকৰ পিছত যথেষ্ট সাহসী হৈ গৈছিল। মানুহ ভয় নকৰা হিৰোই কুকুৰ দেখিলে পাত্তাই নিদিছিল আৰু খেদিহে পঠাব পাৰিছিল। শেহতীয়া ভাৱে হেনো বাঘ দেখিলেও হিৰোই খালি কেৰা চাৱনি এটাহে দিছিল। তাৰ এই অৱদানৰ বাবেই সি জনাজাত হৈছিল "আৰএফআৰআই"ৰ হিৰো হিচাপে।

ভূৱন কছাৰী, গৱেষণা সহায়ক
অপৰাজীতা গগৈ

আজিৰ সমাজত যোগৰ প্ৰাসংগিকতা

যোগৰ ওপৰত জ্ঞান আৰু ইয়াৰ উপকাৰিতাৰ মাপকাঠি বাঢ়ি যোৱাৰ লগে লগে এই বিষয়টোৰ ওপৰত মানুহে দিনক-দিনে গুৰুত্ব আৰোপ কৰা দেখা পোৱা গৈছে। আমি জানো যে ভাৰত হ'ল ঋষি মুনিৰ দেশ। এই ভাৰতবৰ্ষ হ'ল জ্ঞান পিপাসুৰ দেশ । 'ভা' শব্দে ভাৱনা, 'ৰত' শব্দে ৰতি, বৰ্ষ শব্দে বছৰ মানে যিখন দেশৰ লোকসকল বছৰ বছৰ ধৰি জ্ঞানৰ সাধনাত ৰতি হৈ থাকে। নহ'লেনো অনাদি কালৰে পৰা ঋষি মুনি সকলে হিমালয়ৰ ওপৰত বহি জ্ঞান সধনাৰ কাৰণে বছৰ বছৰ ধৰি তপস্যা কৰিছিল নে? সেই ঋষি মুনি সকলৰ দ্বাৰাই ভাৰতবৰ্ষত যোগৰ প্ৰচাৰ হৈছিল আৰু মানৱ শৰীৰৰ বিষয়ে জ্ঞানৰ প্ৰচাৰ হৈছিল।

পুৰণিকালত জনসাধাৰণে যোগৰ চৰ্চা কৰিছিল আৰু নিজকে সুস্থ ৰূপে ৰাখিছিল। কিন্তু সমাজ ব্যৱস্থাৰ পৰিৱৰ্তনৰ লগে লগে ইয়াৰ সাধনা ক্ৰমান্বয়ে কমিবলৈ ধৰিলে। বৰ্তমান পুনৰ জনগণ যোগ শাস্ত্ৰৰ প্ৰতি আকৰ্ষিত হোৱা দেখা গৈছে। ইয়াৰ উপকাৰিতাৰ ওপৰত মানুহৰ জ্ঞান বৃদ্ধি পাব ধৰিছে। ইয়াৰ মূল কাৰণ হ'ল পশ্চিমীয়া উন্নত দেশবোৰত ই লাভ কৰা সমাদৰ। যোৱা বছৰ ১১ ডিচেম্বৰ তাৰিখে United Nations General Assembly ত ভাৰতৰ এম্বেচেদৰ অশোক মুখাৰ্জীয়ে প্ৰথম বাৰৰ বাবে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় যোগদিৱস পতাৰ কথাটো উত্থাপন কৰে। এই প্ৰস্তাৱত 177 খন দেশৰ ভিতৰত 175 দেশে ইয়াৰ সমৰ্থন কৰে। সৌভাগ্যৰ কথা এই যে এই প্ৰস্তাৱটোত বৰ্তমান আমাৰ দেশৰ প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে আগভাগ লৈছিল। ইয়াৰ ফলশ্ৰুতি হিচাপে 21 জুন তাৰিখটো বিশ্ব যোগ দিৱস হিচাপে পালন কৰিবলৈ লোৱা হৈছে। ভাৰতবৰ্ষত জন্ম পোৱা যোগশাস্ত্ৰ সমগ্ৰ বিশ্বই পালন কৰিব, আমাৰ কাৰণে তাতোতকৈ গৌৰৱৰ কথা কি হ'ব পাৰে।

সঁচা কথা, এতিয়া আমাৰ সমাজত দিনক দিনে বৃদ্ধি পোৱা অপকৰ্মবোৰ ৰোধ কৰিবৰ বাবে যোগ সাধনাৰ অতীৱ প্ৰয়োজোন। কাৰণ যোগ হ'ল 'চিত্ত বৃত্তি নিৰোধ:'। অৰ্থাৎ যোগ চিত্তৰ বৃত্তিবোৰৰ নিৰোধক। যোগে শৰীৰ আৰু মন দুয়োটাৰে ওপৰত পৰস্পৰ পৰিপূৰক সংস্কাৰ দি অতি চঞ্চল মনক একাগ্ৰ তথা ব্যাধিগ্ৰস্ত শৰীৰক ব্যাধিমুক্ত কৰি তোলে। আমাৰ সকলোৰে জ্ঞাত যে শৰীৰ ভালে থকাৰ ওপৰত মনৰ বহু প্ৰভাৱ পৰে। আমাৰ মনত যোগ শব্দটো শুনাৰ লগে লগে হিমালয়ৰ ওপৰত কোনো এক গুহাত বছৰ বছৰ ধৰি তপস্যা কৰি থকা যোগীৰ চিত্ৰ মনলৈ ভাহি আহে। যোগ শাস্ত্ৰৰ বাস্তৱিক জ্ঞান নথকাৰ কাৰণে এনে হয়। অৱেশ্য আজি কালিৰ ধাৰণাটো অলপ বেলেগ হৈছে। কাৰণ স্বামী ৰাম দেৱে তেখেতৰ যৌগিক ক্ৰিয়া বিশ্বৰ সকলো মানুহৰ মাজত টেলিভিশ্বনৰ আস্থা চেনেলৰ মাধ্যমেৰে প্ৰচাৰ কৰিছে। সেয়ে হয়টো কিছুলোকৰ মুখত শুনা যায় যে মই আস্থা কৰো বা মই ৰামদেৱ কৰো। যোগ শব্দৰ ঠাইত আস্থা নাম ললে। ইও হয়টো মানুহৰ জ্ঞানৰ অভাৱৰ কাৰণ। সকলো মানুহে যোগৰ ওপৰত বিস্তৃত জ্ঞান এতিয়াও লাভ কৰা নাই। যিকোনো বিষয়ৰ ওপৰত মতামত ব্যক্ত কৰাৰ পূৰ্বে সেই বিষয় বস্তুৰ ওপৰত যথেষ্ট অধ্যয়নৰ প্ৰয়োজোন।

যোগ সুখী আৰু সমৃদ্ধ জীৱনৰ মাপ-কাঠি। 'যুজ' ধাতুৰ পৰাই যোগ শব্দৰ উৎপত্তি, যুজ মানে সংযোগ ঘটোৱা বা যুক্ত কৰা। গীতাত কৈছে 'সমত্বং যোগ উচ্ছতে'। যিকোনো বস্তু সমভাৱে চোৱা আৰু অনুভৱৰ দ্বাৰা অহা শক্তিক বিলীন কৰাই প্ৰকৃত অৰ্থত যোগ। আমি জানো যে যুক্ত বা সংযোগ কৰিবলৈ হ'লে দুটা সত্বাৰ প্ৰয়োজন। যদি এটি সত্বা মানৱ হয় তেন্তে দ্বিতীয়টি কি হ'ব পাৰে সততে অনুমান কৰিব পৰা যায়। সেই দ্বিতীয় সত্বা, যাক যিমতে যিয়ে যি নামেৰে স্মৰণ কৰে। শৰীৰৰ কাৰ্য্যকলাপবোৰ নিয়ন্ত্ৰণ কৰা শক্তি আৰু বিশ্বৰ কাৰ্য্যকলাপবোৰ নিয়ন্ত্ৰণ কৰা শক্তিৰ লগত যোগযুক্ত হোৱাটো যোগৰ লক্ষ্য। এই লক্ষ্যত উপনীত হ'বৰ বাবে শৰীৰ অতি বিশুদ্ধ অৱস্থালৈ অনাটো নিতান্তই প্ৰয়োজন। সেয়ে শৰীৰ বিশুদ্ধ কৰাৰ পদ্ধতিটো যোগত গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হৈছে। যোগৰ স্ৰস্তা মহামুনি পতঞ্জলীয়ে তেখেতৰ যোগসাস্ত্ৰত অষ্টাংগ যোগৰ বিষয়ে লিখি থৈ গৈছে। এই অষ্টাংগ যোগ কেইটি হ'ল ইয়ম, নিয়ম, আসন, প্ৰাণায়াম, প্ৰত্যাহাৰ, ধাৰণা, ধ্যান আৰু সমাধি। যেনেকৈ কিছুমান সূত্ৰৰ দ্বাৰা আমি বিজ্ঞানৰ অধ্যয়ন কৰোঁ আৰু সেই সূত্ৰ মানি নচলোঁ তেন্তে আমি জানো পৰীক্ষাত পাচ কৰিম? ঠিক তেনেকৈ এই আঠোটা সূত্ৰ যোগত যদি পালন কৰা নাযায় আমি যোগৰ সঠিক উপলব্ধি অনুভৱ কৰিব নোৱাৰিম।

ইয়মৰ পাঁচটা ভাগ : অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্ৰহ্মচাৰ্য্য আৰু অপৰিগ্ৰহ। নিয়ম হ'ল যোগৰ দ্বিতীয় সোপান। ই পাঁচ প্ৰকাৰৰ, শৌচ, সন্তোষ, তপ, স্বাধ্যায় আৰু ঈশ্বৰ প্ৰণিধান।

আসন হ'ল তৃতীয় সোপান। যিকোনো কাম কৰিবৰ সময়ত যি ধৰণেৰে স্থিতি লোৱা হয়, য'ত কোনো টান বা কষ্ট অনুভৱ নহয়, শৰীৰ সম্পূৰ্ণ ঢিলা থাকে তেনে স্থিতিয়ে আসন। আসনত যোগ শব্দ যোগ কৰিলে হয় যোগাসন।

চতুৰ্থ সোপান হ'ল প্ৰাণায়াম। শৰীৰটোৰ ভিতৰত থকা সত্বাটোক বচাবৰ বাবে আমি যি উশাহ-নিশাহ লৈ থাকো তাক যদি প্ৰাণ বুলি ধৰা হয় সেই প্ৰাণক আৰাম দিবৰ বাবে বা শক্তি দিবৰ বাবে যি প্ৰণালী তাক প্ৰাণায়াম বুলি ক'ব পাৰি। ইয়াক গভীৰ ভাৱে বিশ্লেষণ কৰিলে ক'ব পাৰি চঞ্চল চিত্তক একাগ্ৰতাৰ বাবে তথা স্বয়ংপ্ৰকাশী চিত্তৰ পৰা মায়াৰ আৱৰণ আতৰাবৰ বাবে যি অভ্যাস তাক প্ৰাণায়াম বুলি ক'ব পাৰি।

পঞ্চম সোপান হ'ল প্ৰত্যাহাৰ। এইদৰে সকলো ভৌতিক বন্ধনৰ পৰা মুক্ত হোৱাৰ পিছত ধাৰণা আৰু ধ্যানৰ অভ্যাস কৰি সমাধি প্ৰাপ্ত হ'ব পাৰে।

এইখিনিতে আমাৰ মনলে এটা প্ৰশ্ন আহিব পাৰে যদি যোগ অভ্যাসৰ দ্বাৰা ৰোগ নিৰাময় কৰিব পাৰি তেন্তে ইয়াক ৰোগৰ উপাচাৰ পদ্ধতি হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি নেকি? প্ৰকৃততে যোগ কোনো উপাচাৰ পদ্ধতি নহয় বৰং শৰীৰক যাতে কোনো ৰোগে আক্ৰমণ কৰিব নোৱাৰে এনে অৱস্থা শৰীৰত নিৰ্মাণ কৰাৰ ব্যৱস্থাহে যোগশাস্ত্ৰত নিহিত হৈ আছে।

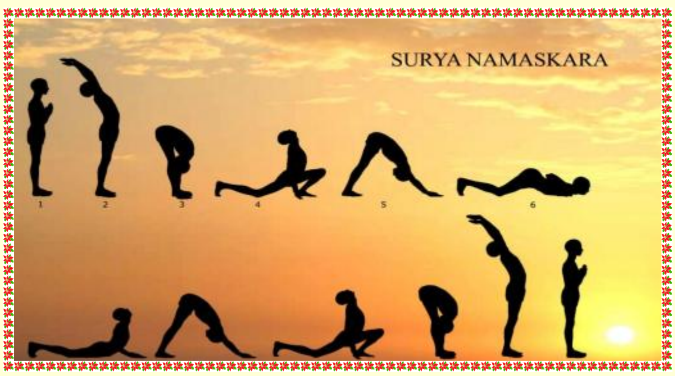

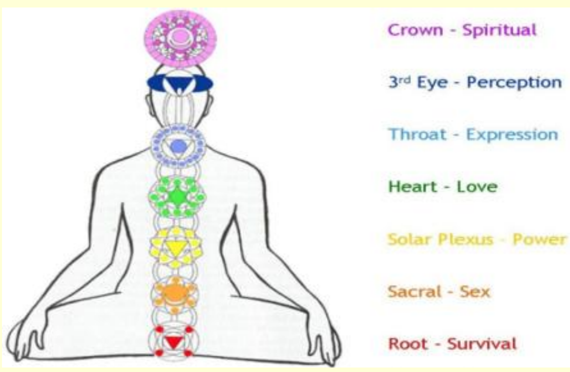

উন্নয়নশীল দেশত মানৱ সমম্পদৰ অপচয়: এক চমু আলোকপাত

অসীম চেতিয়া

গ্ৰন্থাগাৰ তথ্য সহায়ক

সাঁথৰ আৰু কাব্যিকতাৰ পাকলগা জেলেপীয়ে বিৰক্ত দিয়া পাঠকসকললৈ মোৰ সৰল স্বীকাৰোক্তি – মই অদৃষ্টবাদী নহওঁ আৰু এয়া কোনো জ্যোতিষ চৰ্চাৰ যো-জাও নহয়। প্ৰবন্ধৰ সমূহীয়া থূপৰ মাজত আপোনালোকক আকৰ্ষিত কৰিবলৈ এয়া মোৰ নিৰ্দোষ প্ৰচেষ্টা, পোনপটীয়া অৰ্থত বিজ্ঞাপন।

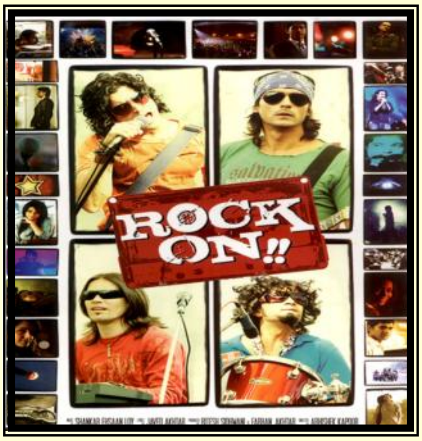

বৰ্তমান উঠি অহা প্ৰজন্মৰ (বিশেষকৈ উন্নয়নশীল ৰাষ্ট্ৰসমূহত) এক বিশেষ সমস্যা হৈছে আকাংক্ষিত লক্ষ্যত উপনীত হোৱাত ব্যৰ্থতা, পছন্দমতে জীৱন গঢ়াত আহিপৰা বাধা আৰু পৰিস্থিতিৰ তাড়নাত বাধ্য হৈ এনে কামত আত্মনিয়োগ কৰা, যিটো তেওঁলোকৰ আকাংক্ষিত নহয়। ইয়াত কামবোৰ নঞৰ্থক দৃষ্টিভংগীৰে বিচাৰ কৰা হোৱা নাই কিন্তু সকলো কাম সকলোৰে পছন্দৰ নহয় আৰু পৰিস্থিতিয়ে তেওঁলোকক সেইধৰণৰ কামেই কৰিবলৈ বাধ্য কৰে। ইয়াৰ লগে লগে এচামে হেনো ভাগ্যৰ জোৰত নিঃকিনৰ পৰা কোটিপতি হয়গৈ আৰু বাকীসকল ভাগ্যদেৱীৰ বঞ্চিতৰ মাজত চলে দেৱীৰ কৃপালাভৰ কল্পনা, পূজা-অৰ্চনা, ভগৱান বিশ্বাস (য'ত মন্দিৰত এটকাৰ পৰা দহটকীয়া দলিয়াই হাজাৰ লাখটকীয়া মূল্যৰ প্ৰাৰ্থনা কৰা হয়)। মোৰ বিবেক আৰু বিষয় অৰ্থনীতিৰ জ্ঞানেৰে ক'বলৈ গ'লে এয়া কেৱল সময় আৰু সম্পদৰ অপব্যয়, এখন লাভহীন জুৱা, য'ত আপোনাৰ পকেটৰ পৰা পূজাৰীৰ জোলোঙালৈ সম্পদৰ স্থানান্তৰ হয় আৰু আপোনাৰ আত্মবিশ্বাস আৰু মানসিক সবলতা ধৰ্মভীৰুতালৈ ধীৰে ধীৰে পৰ্যবসিত হয়।

প্ৰসংগৰ পৰা কিছুদূৰ ফালৰি কাটি আহিলোঁ। এইবাৰ মনলৈ আহিছে "Rock On" চিনেমাখনলৈ। তাত এটা মূল চৰিত্ৰ "আদিত্য" (ফাৰহান আখতাৰ)ক আপোনালকৰ মনত আছেনে? তেওঁ আৰু তেওঁৰ বিশেষ বন্ধুকেইজনৰ আন্তৰিক ইচ্ছা আছিল এটা বেণ্ড (Band) খুলি গান গাই ফুৰা। কিন্তু পৰিস্থিতিৰ তাড়নাত আদিত্য হ'লগৈ এটা কোম্পানীৰ উচ্চপদস্থ মেনেজাৰ। ঠিক তেনেদৰে মনলে আহিছে "3 Idiots" চিনেমাখন। তাত থকা এটা চৰিত্ৰ "ফাৰহান"'কো আপোনালোকে পাহৰা নাই ছাগে। ফাৰহানে শৈশৱৰ পৰাই ফট'গ্ৰাফী ভাল পাইছিল আৰু সৰুৰে পৰাই পৃথিৱীৰ বিখ্যাত Wildlife Photographer "Andre Istvan"ৰ লগত কাম কৰাৰ সপোন দেখিছিল কিন্তু ঘৰুৱা পৰিৱেশৰ দাবীত মূৰকত ইঞ্জিনিয়াৰিং পঢ়িবলৈ গৈ বাৰে বাৰে বিফলতাৰ মুখ দেখিছিল। এই দুয়োটা চৰিত্ৰতে শিল্পীয়ে অতি নিখুঁতকৈ ফুটাই তুলিছে পছন্দৰ কাম কৰিব নোপোৱাৰ মানসিক অন্তৰ্দ্বন্দ্ব। এয়া আজি অধিকাংশ যুৱ ভাৰতীয়ৰে মানসিক অৱস্থাৰ প্ৰতিনিধিত্ব।

আমাৰ দৰে দেশৰ মানৱ সম্পদ অপচয়ত আমাৰ অভিভাৱকসকলৰ ভূমিকাকো নুই কৰিব নোৱাৰি। আপোনালোকে "Tare Zameen Par" চিনেমাখন চালেই এই বিষয়ে সবিশেষ বুজিব পাৰিব। আমাৰ দেশত সন্তান জন্ম হোৱাৰ পাছতেই মাক-দেউতাকে সন্তানক কেৱল ডাক্টৰ ইঞ্জিনিয়াৰ হোৱাৰ সপোন দেখে আৰু যেতিয়া সেই সপোন বাস্তৱত ৰূপায়িত নহয় তেতিয়া তেওঁলোক হতাশাগ্ৰস্ততাত ভোগে।

আমাৰ দেশত প্ৰকৃতাৰ্থত কিমান শতাংশ মানৱ সম্পদ পচন্দমতে গঢ় লৈ উঠে। কণ কণ ল'ৰা ছোৱালীক জোৰকৈ (প্ৰতিভা নাথাকিলেও) বিভিন্ন পাঠ্যসূচী, সুকুমাৰ কলা আদিত অভিভাৱকে নিজৰ খেয়াল খুচিত শিকাবলৈ আৰম্ভ কৰাৰ পৰা জন্মতেই আমাৰ ল'ৰা ডাক্টৰ, ইঞ্জিনিয়াৰ হ'ব বুলি কোৱাসকললৈকে; মানুহ গঢ়াৰ ঠিকাদাৰ, প্ৰতিভাৰ স্বয়ম্ভূ কাৰিকৰৰ আমাৰ ইয়াত অভাৱ নাই। ফলস্বৰূপে বহু প্ৰতিভা মৰহি যায়, বহু পচন্দ নষ্ট হয়, জাতিটোৰ মানসিক বিকাশত বাধা আহে। আকৌ অতি দৃঢ়তাৰে নিজৰ পচন্দৰ যোগ্যতা আহৰণ কৰা সকলক মানসিকভাৱে বলি দিবলৈ দুৰ্নীতি, স্বজনপ্ৰীতি, অনিয়ম, দৰিদ্ৰতা, নিবনুৱা সমস্যা, অৰ্থনৈতিক কাঠামোৰ, অভাৱ আদি আছেই। এজন শিক্ষাৰ্থীয়ে যদি কিছু অগতানুগতিক ধৰণে, অন্তৰৰ তাড়নাৰে জীৱনটো গঢ় দিব বিচাৰে, আমাৰ দৰে দেশত তাক বিভিন্ন উপায়েৰে নিৰুৎসাহিত কৰা হয়। নিজৰ সন্তানে অকণমান বেছি সময় খেলা ধূলা কৰটো অপৰাধ, কিয়নো পঢ়াত মন নবহিব; অথচ অলিম্পিকত ভাৰতৰ পদকৰ সংখ্যা কম হলে আমি সমালোচনাত মুখৰ! নাটক -অভিনয়ত উৎসাহীজনক গৰিহণা দিয়া হয় মূল্যৱান জীৱনটো ধংস (?) কৰাৰ বাবে; কিন্তু বলিউডৰ নায়ক-নায়িকাৰ বাবে আমি প্ৰাণ পৰ্য্যন্ত দিব পাৰোঁ। হাইস্কুল শিক্ষান্ত পৰীক্ষাত ভাল ফলাফল দেখুৱালে বিজ্ঞানেই পঢ়িব লাগিব, কিয়নো কলা বা বাণিজ্য দ্বিতীয় শ্ৰেণীৰ নাগৰিকৰ সম্পদ! এজন শিক্ষাৰ্থীয়ে যদি প্ৰণালীৱদ্ধ পৰম্পৰাগত শিক্ষাৰ প্ৰতি বেছি আগ্ৰহী নহৈ ছবি আঁকি বা স্থাপত্য-ভাস্কৰ্য্য কলাত মনোনিৱেশ কৰে তেতিয়া তেওঁ সমাজৰ পৰা বলিয়া আখ্যা পোৱাৰ নব্বৈ শতাংশ সম্ভাৱনা আছে। গতিকে আজিও নৱপ্ৰজন্মৰ পছন্দত গতিৰোধক (Speed Breaker) আছে। তেওঁলোকৰ পছন্দত অন্তৰৰ তাগিদাতকৈ সামাজিক ভীতিহে অধিক পৰিস্ফুট। এনে পৰিস্থিতিত ভাল খেলুৱৈ, কলা সাধক, শিল্পী-সাহিত্যক, বৈজ্ঞানিক, গায়ক আদিৰ সৃষ্টি বহুলাংশে নিৰ্ভৰ কৰে পৰিস্থিতিৰ ওপৰত।

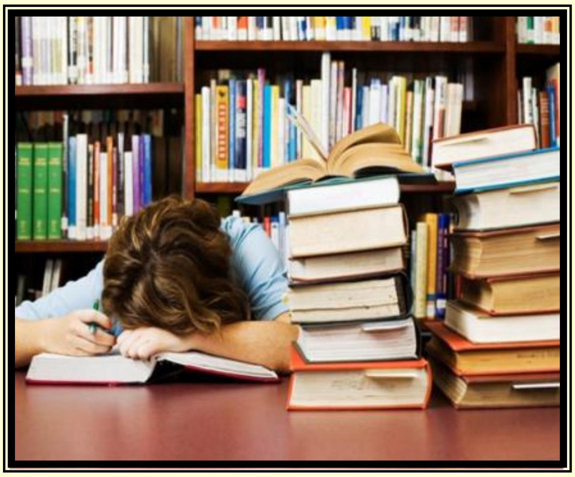

তেওঁলোক বহু সময়ত সমাজৰ "By chance product but a not a by choice product". ব্যতিক্ৰম নিশ্চয় আছে, কিন্তু অধিকাংশতে আমাৰ জীৱনবোৰ যেন জুখি-মাখি থোৱা ফ্ৰেমত বন্দী, উৰিবৰ বাবে আমাৰ ওপৰত এখন সুনীল আকাশ, কিন্তু সমাজৰ হাঁতোৰাত, পৰিয়ালৰ তথাকথিত আদৰ্শ (?)ত, পৰিস্থিতিৰ পাকচক্ৰত আমিবোৰ একো একোজন বাওনা, চন্দ্ৰ আমাৰ বাবে এআকাশ স্বপ্ন।

যুৱপ্ৰজন্মৰ মাজত কৰ্মসংস্থান লাভৰ সহজ সূত্ৰ "Luck, Labour, chance". পচন্দমতে নিজকে গঢ়ি লোৱাত অব্যৱসায় বা শ্ৰম আৰু সুযোগৰ ভূমিকা সহজে অনুমেয়। কিন্তু ভাগ্য? ভাগ্য কিয় লাগে? কিন্তু আমাৰ পছন্দৰ এটা পদৰ বিপৰীতে সহস্ৰাধিক যোগ্য প্ৰাৰ্থী, সকলোতে টেবুলৰ তলৰ নীতি, নিৰ্লজ্জ স্বজনপ্ৰীতি আৰু বহুত কিবা কিবি। এটা মিঠাই এশজন ভোকাতুৰৰ মাজত দলিয়াই শাসনতন্ত্ৰই প্ৰশাসনীয় ব্যৱস্থাই আমাৰ ভাগ্যৰ (?) পৰীক্ষা কৰে। আমি গৰজি উঠাৰ সলনি ভাগ্যদেৱীৰ আৰাধনা কৰোঁ। আমাক একগোট হোৱাৰ পৰা অতি কৌশলেৰে আতৰাই ৰখা হয় বিভিন্ন সংৰক্ষণৰ ব্যৱস্থা কৰি; কৰ্মৰ অধিকাৰ (Right to work), পছন্দৰ অধিকাৰ (Right to choice) আমাৰ প্ৰাপ্য; তাৰ পৰা বঞ্চিত ৰাখিবলৈ বিভিন্ন ব্যৱস্থা অতি চতুৰ ভাৱে সংবিধানৰ গণ্ডীতেই ৰখা হৈছে। কিয় পছন্দৰ সংস্থাপনৰ সংখ্যা কম বুলি সৰ্বস্তৰৰ প্ৰতিবাদ উঠাৰ সলনি দাবী উত্থাপিত হয়। আমাক কিয় “আৰু অনুন্নত” আখ্যা দিয়া হোৱা নাই? আমি “অনুন্নত” আমাক পুতৌ কৰক সেই দুৰ্বল আৰু কাপুৰুষৰ চিন্তা ধাৰা আমাৰ যুৱসমাজৰ? অনুভৱ হয়। ভাৰতৰ যুৱসমাজ মানসিক ভাৱে বহু দুৰ্বল হৈ পৰিছে অতিপৰিকল্পিত সুচতুৰ পৰিকল্পনাত। এই ক্ষেত্ৰত ষড়যন্ত্ৰ অতি সবল। অপ্ৰাসংগিক হেতু বাহুল্য বৰ্জন কৰিলোঁ।

আমাক স্বাধীনতা লাগে। পছন্দৰ স্বাধীনতা, পখীৰ দৰে এআকাশ স্বাধীনতা, বান্ধোন ভঙাৰ এপৃথিৱী ক্ষমতা। দেশত আজি কেৱল দৃশ্যমান সমস্যাই নহয়, অদৃশ্যমান মনসিক সমস্যাও আছে। শুদ্ধ পথ আমাৰ কাম্য, আকাংক্ষিত লক্ষ্য আমাৰ পছন্দ। তাৰ বাবে যুৱসমাজে ভাঙি পেলাওক সকলো বান্ধোন। যদি ভুল হয় ভাঙিব লাগিব পৰিয়াল সমাজ আৰু দেশৰ বান্ধোন। নিয়ম ভঙাৰো নিয়ম আছে। সাহসৰ নিজা পৰিভাষা আছে, ভয়ৰ সিপাৰে বিজয় আছে। এখন ভীতিমুক্ত দুশ্চিন্তামুক্ত ভাৰতবৰ্ষ আমাৰ সপোন হ'ব নোৱাৰেনে? য'ত আমি সকলোৱে সমস্বৰে কব পাৰোঁ– All is Well.

সপোন

ক'ম ক'ম বুলি
বুকুত খুন্দিয়াই থকা শব্দবোৰ ;
লিখিম লিখিম বুলি
ভাবি থকা অনন্য কবিতাবোৰ ;
আৰু আঁকিম আঁকিম বুলি
সাঁচি ৰখা হেঁপাহৰ ছবিবোৰ ;

কৈয়েইতো পেলাইছিলোঁ
খুন্দিয়াই থকা শব্দবোৰ,
লিখিয়েইতো পেলাইছিলোঁ
সেই আৱেগৰ কবিতাবোৰ,
আৰু আঁকিয়েইতো পেলাইছিলোঁ
হেঁপাহৰ ৰঙীন ছবিবোৰ,
কিন্তু ক'তা ?
আজি
শব্দবোৰ আধাফুটা হৈয়েই ৰ'ল
কবিতাবোৰ অবুজ সাঁথৰ হৈ ৰ'ল
আৰু -- ছবিবোৰ ?
ছবিবোৰ ধূসৰিত হৈ ৰ'ল
ৰঙবোৰও নাইকিয়া হ'ল
সপোনবোৰচোন সপোন হৈয়ে ৰ'ল ।

অৰবিন্দ ডেকা

গৱেষণা সহায়ক

হেৰুৱা আশাৰ পমখেদি

মাজনিশা কুলিৰ করুণ বিননিত
সাৰ পাই উঠে মোৰ ভগ্ন হৃদয়ৰ বেদনা
বুকুত উপচি উঠে অন্তহীন কান্দোনৰ প্ৰতিধ্বনি
পাইয়ো হেৰুৱাৰ দুখত মোৰ জীৱন জুৰুলা
বিষন্নতাৰ গভীৰতাত প্ৰক্ষেপিত স্মৃতি
মুহূৰ্ত বোৰৰ প্ৰতিচ্ছবি।

নেমাতিবি,
নেমাতিবি হেৰ' কুলি তোৰ প্ৰিয়জনক
বিচাৰি চলাথ কৰি ঘোৰ অমানিশা !
আৰু নবঢ়াবি দুৰ্বহতাৰ গভীৰতা !!
এনেকৈয়ে কিমান দিন?
কিমান দিন আৰু ৰাতি
বিৰহ বিষন্ন দুখৰ নদীত উটুৱাম
ৰংহীন বসন্তৰ স্মৃতিৰ পাপৰি –
হেৰুৱা আশাৰ পম খেদি খেদি।

দিপান্বিতা ডেকা

উচ্চ শ্ৰেণী লিপিক

মহাবিজ্ঞান

মহাবিজ্ঞান
মহাজাগতিক
মহা সংঘৰ্ষণ
মহা বিশ্বৰ স্ৰষ্টা মই
মই মহাবিজ্ঞান
মইয়েই আইনষ্টাইন
মইয়েই নিউটন
মইয়েই সৃষ্টিৰ মহা ৰসায়ন
মইয়েই বিন্দু মহা সিন্ধু
প্ৰাণ প্ৰতিষ্ঠাৰ
আমোঘ বীৰ্য
মহা বিশ্বৰ মহান ৰহস্য
মইয়েই উশাহ মইয়েই বতাহ
মইয়েই বিশাল বিশ্ব মহাকাশ
মইয়েই চন্দ্ৰ মইয়েই সূৰ্য
বিশ্ব জগতৰ প্ৰাণ প্ৰাচুৰ্য
মইয়েই তৰা মইয়েই মহাসাগৰ
উৰ্ম্মীয়ো মইয়েই, মইয়েই উল্কাপাত
পৃথিৱীৰ গৰ্ভৰ মইয়েই মহাকাল
সৃষ্টিত মই ধ্বংসত মই
মইয়েই মহাকাশ যান
মহাবিশ্বৰ প্ৰাণ
মইয়েই দিন মইয়েই ৰাতি
মইয়েই সময়
সদাব্যস্ত মই
নাই মোৰ যতি
মইয়েই মহাবিজ্ঞান
মইয়েই ভাঙো
ৰহস্যৰ ধ্যান

নিবেদিতা বৰুৱা দত্ত
গৱেষণা সহায়ক

প্ৰণিপাত

শাৰদীয় এটি পৱিত্ৰ দিনত
শেৱালী ফুলৰ আমোল-মোলত,
জন্ম তুমি মহা মানৱৰ
ক্ষুদ্ৰ পৰিয়ালৰ সেই ৰামেশ্বৰমৰ।

বজা নাছিল শংখ আৰু নাছিল গদাপদ্ম
দিনমণি জন্ম তোমাৰ,
সাধাৰণ মাছতীয়াৰ অসাধাৰণ পুত্ৰ।
ৰজাৰ পো নহয় ৰজা
আমোলাৰ পোও নহয় সেই
তাক তুমি কৰিলা প্ৰমাণ,
কষ্ট ধৈৰ্য একাগ্ৰতাৰে
জিনিলা সপোন তুমি মনোনয়নৰ!!
তুমি প্ৰাজ্ঞ, তুমি মনীষী
সমাজ সেৱাই আছিল তোমাৰ বৃত্তি
নাই কোনো ঋদ্ধি,
থাকিলা তুমি আজীৱন ব্ৰতী।।
স্ৰজিলা পৃথিৱী আৰু ডেউকা অগ্নিৰ
কৰিলা দেশক তুমি অসাধাৰণ দান,
কোনো নাছিল পৰ সকলোৰেই তোমাৰ ঘৰ
মিত্ৰ তুমি শিশু সকলৰ
নাছিল দৃষ্টিত তোমাৰ কোনো সৰু বৰ।।
আজীৱন ভজিলা
বুলনি ঘৰ গঢ়িলা,
বোৱালা প্ৰজ্ঞাৰ সুধা
গোৱালা একতাৰ গান,
মনস্পৰ্শা ব্যক্তিত্ব শিক্ষক ৰূপী তুমি
ব্যাপিলা ভাৰত মহান।
ক্লান্ত মুখশ্ৰী পঞ্চভূত শৰীৰ
ভাগিৰথী তুমি যেন ভূৱন বাসীৰ,
জনাওঁ তোমাক সহস্ৰ প্ৰণাম
বিশ্বজয়ী তুমি আব্দুল কালাম।।

নয়নমণি শইকীয়া
জে. আৰ. এফ

.....শিক্ষাগুৰু ...

সময়ৰ ধাতুৰে গঢ়িত
তেওঁলোকৰ জীৱনৰ প্ৰতিটোপাল
মনৰ বাকৰিত কেতিয়াও ওলমি নাথাকে
হতাশাৰ বীৰ্জ
তেওঁলোকে গান গায়....
সাধনাৰ গান,
সমাজৰ গান,
তেওঁলোকে সিঁচি দিয়া জ্ঞানৰ গলিৰে
অগ্ৰসৰ হয় বহুতো নতুন স্বপ্ন
তেওঁলোক মহান,
তেওঁলোক সমাজপ্ৰেমী,
তেওঁলোকৰ শিক্ষাৰ গৱেষণাত সৃষ্টি হয়
অনেক নতুন প্ৰজন্মৰ বীৰ্জ...
জীৱনক বিচাৰি ফুৰা এজাক উদ্দামী প্ৰজন্মই
তেওঁলোকৰ জ্ঞানৰ ছাঁত জিৰাই আজীৱন....
তেওঁলোক দেশপ্ৰেমী,
তেওঁলোক ত্যাগী,
তেওঁলোকে বিচাৰে প্ৰগতিৰ নতুন স্বপ্ন
বোমা-বাৰুদৰ ধোঁৱা তেওঁলোকে চাব নোখোজে
সহিব নোৱাৰে আধাপোৰা মঙহ আৰু তেজৰ গোন্ধ....

হিংসা, সন্ত্ৰাসৰ সংজ্ঞা নিবিচাৰে তেওঁলোকে...
তেওঁলোকে সিঁচি দিয়া জ্ঞানৰ বীৰ্জ
অংকুৰিত হয় সমাজৰ প্ৰতিটো
আলিয়ে-গলিয়েদি....
অনেকজনে জ্ঞানৰ মুকুতা বিচাৰে
তেওঁলোকে বোৱাঁই দিয়া জ্ঞানৰ নদীত....
হে, মহান শিক্ষাগুৰুসকল
আপোনালোক ধন্য
আপোনালোকৰ আদৰ্শই
ধুই নিকা কৰক
সমাজক, দেশক.....
আৰু নৱ-সৃষ্টিৰে নৱ-প্ৰজন্মাক
আলোকিত কৰক সঠিক পথৰ সন্ধান.....
আপোনালোক আৰু যেন অধিক
শক্তিশালী হৈ...
প্ৰগতিৰ পথত দেশক আগুৱাই নিব পাৰে
তাৰে কামনাৰে
জ্ঞানৰ পোহৰ বিলাই দিয়ক চৌদিশে আজীৱন....।।

পুতুল বুঢ়াগোহাঁই
এফ.এ.

বৰ্ষাৰণ্য

এটা সেউজীয়া সপোনৰ প'ম খেদি
ধৰিত্ৰীৰ পূজাত – হাতে হাত ধৰি
ব'লা – সেউজীয়াৰ দেশলৈ

(২)

আবেলি বহুত হ'ল
গান গাই থকা ছোৱালীজনী নিয়ৰ হ'ল,
আইৰ নিচুকনি গীতৰ পুৱাৰ বেলি হ'ল,
জোনাকৰ বৰষুণত গা-ধুৱা ছোৱালীজনী
ক'তেনো হেৰাল।

(৩)

দুৱাৰখন খুলি দিয়া
সোমাই আহক এমুঠি পোহৰ
যোৱা নিশাৰ বাঁহীৰ সুৰ
বাজক হৃদয়ে হৃদয়ে

বিনোদ কুমাৰ সোনোৱাল
ব্যক্তিগত সচিব

বৰ্ষাৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানৰ চৌহদত বিচৰণ কৰা কিছুমান পক্ষী

আলোকচিত্ৰ — প্ৰীতিমণি দাস বৰা
গ্ৰন্থাগাৰ তথ্য সহায়ক

মইনা চৰাই *Gracula religiosa intermedia*

মৌপিয়া চৰাই *Aethopyga siparaja scheriae*

মুগাৰঙী বাঘচৰাই *Lanius cristatus*

নীলবুকুৱা হেঁটুলুকা *Megalaima asiatica asiatica*

কাঠ শালিকা *Sturnus malabaricus blythii*

গলমণিকা ভাটো *Psittacula krameri*

বগাপিঠীয়া টুনি *Lonchura striata*

চেকচেকী *Dendrocitta vagabunda*